रविवार
31 दिसम्बर 2023

पृष्ठ 4

क्या खुबानी खाने के फायदे जानते हैं आप? दूर रहेंगी कई बीमारियां!

पृष्ठ 5

संजना संघी ने धक धक के सीक्वल पर लगाई मुहर!

● देहरादून
● वर्ष 31
● अंक 316
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

आज का विचार

निराशा के समान दूसरा पाप नहीं। आशा सर्वोत्कृष्ट प्रकाश है तो निराशा घोर अंधकार है।

' रश्मिमाला

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

आर.एन.आई.- 59626/94

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

सीएम ने सुनी पीएम के मन की बात

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को प्रेमनगर, सुद्धोवाला में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम का 108वां संस्करण सुना। इस अवसर पर उन्होंने लेखक हरि सिंह बिष्ट द्वारा लिखी गई पुस्तक 'मन की बात-सकारात्मक संवाद से सशक्त भारत' का विमोचन भी किया। इस पुस्तक में प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम के 75वें संस्करण से 99वें संस्करण तक विस्तार से वर्णन किया गया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम सुनने के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि मन की बात कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री ने हमेशा देश वासियों को जोड़ने और समाज में बेहतर कार्य करने के लिए लोगों को प्रेरित किया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से उन्होंने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले लोगों को प्रोत्साहित करने का कार्य भी किया है। विभिन्न क्षेत्रों में शोध और अनुसंधान के साथ विशिष्ट कार्य करने वालों को इस कार्यक्रम के माध्यम से अलग पहचान मिली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी दुनिया के पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने देशवासियों को जोड़ने और समाज सेवा से जुड़े कार्यों के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए 100 से अधिक बार मन की बात साझा की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का देवभूमि उत्तराखण्ड से कर्म और मर्म का रिश्ता है। उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन में उत्तराखण्ड का हर क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। राज्य में सड़क, रेल, हवाई और रोपवे कनेक्टिविटी का तेजी से विस्तार हुआ है। केदारनाथ का पुनर्निर्माण और बद्रीनाथ के मास्टर प्लान का कार्य तेजी से हुआ है। राज्य में अनेक परियोजनाओं पर कार्य चल रहे है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में इस दशक को उत्तराखण्ड का दशक बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

इस अवसर पर विधायक सहदेव सिंह पुण्डीर, भाजपा के प्रदेश महामंत्री आदित्य कोठारी, जिलाध्यक्ष भाजपा देहरादून ग्रामीण मीता सिंह, उपाध्यक्ष उच्च शिक्षा उन्नयन समिति डॉ. देवेन्द्र भसीन एवं अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

50 लाख की धोखाधड़ी कर फरार चल रहा दस हजार का ईनामी दबोचा

हमारे संवाददाता

देहरादून। शेयर बाजार में इन्वेस्टमेंट कराने के नाम पर 50 लाख रूपये की धोखाधडी कर एक साल से फरार चल रहे 10 हजार के ईनामी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

जानकारी के अनुसार बीती 1.12.2022 को उत्तम सिंह पवार निवासी भानियावाला द्वारा थाना रानीपोखरी में तहरीर देकर बताया गया था कि मोहित अग्रवाल पुत्र स्वर्गीय सीताराम निवासी गाजियाबाद द्वारा उनको शेयर मार्केट में इन्वेस्ट करने के नाम पर 50 लाख रुपए की धोखाधड़ी की गयी है। मामले में पुलिस ने तत्काल मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी गयी। जबकि मुकदमा दर्ज होने के बाद से ही आरोपी मोहित अग्रवाल लगातार फरार चल रहा था व अपने

ठिकाने बदल रहा था। आरोपी के लगातार फरार चलने के दृष्टिगत एसएसपी देहरादून द्वारा उस पर 10 हजार का ईनाम भी घोषित किया गया था। आरोपी की तलाश में जुटी पुलिस टीम ने बीती शाम एक सूचना के आधार पर आरोपी मोहित अग्रवाल को उसके नए ऑफिस बीख्र 108 सेक्टर 63 नोएडा (उ0प्र0) से गिरफ्तार कर लिया गया है। जिसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

दस्ताने बनाने वाली फैक्ट्री में आग में 6 की मौत

मुंबई । महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में रविवार को हाथ के दस्ताने बनाने वाली एक कंपनी में लगी भीषण आग से कम से कम 6 लोगों की मौत हो गई। अग्निशमन विभाग के अधिकारियों के अनुसार, घटना वालुज एमआईडीसी क्षेत्र में स्थित फैक्ट्री में तडके हुई। आग लगने का कारणों की जांच की जा रही है। अग्निशमन

विभाग के अधिकारियों ने बताया कि रात्रि ०2. 15 बजे लगी आग ने फैक्ट्री को अपनी चपेट में ले लिया। स्थानीय निवासियों ने उन्हें छह लोगों के अंदर फंसे होने की जानकारी दी। एक अग्निशमन अधिकारी मोहन मुंगसे ने कहा, हमारे अधिकारी अंदर गए और छह लोगों के शव बरामद किए गए हैं। फिलहाल बुझाने की प्रक्रिया चल रही है। पहले स्थानीय लोगों की रिपोर्टों से पता चला था कि पांच कर्मचारी फंसे हुए थे, लेकिन बाद में अग्निशमन विभाग की पुष्टि से पता चला कि मरने वालों की संख्या छह थी। कर्मचारियों के मुताबिक, जब आग लगी तो कंपनी बंद थी और वे सो रहे थे। जब आग लगी तो लगभग 1०-15 कर्मचारी इमारत के अंदर सो रहे थे। जबकि कुछ भागने में सफल रहे, कम से कम पांच अंदर फंस गए।

झोंपडी में रहने वाले विधायक बाबूलाल खराडी को भाजपा ने बनाया मंत्री

नई दिल्ली। राजस्थान में बीजेपी ने एक झोंपडी में रहने वाले विधायक को मंत्री पद से नवाजा है। यह विधायक हैं बाबूलाल खराडी जो कि भजनलाल शर्मा सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार में मंत्री बने हैं। राज्यपाल कलराज मिश्र ने 22 विधायकों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इनमें 12 कैबिनेट मंत्री और 5 स्वतंत्र प्रभार, 5 राज्य स्वतंत्र प्रभार मंत्री बनाए गए। भजन लाल कैबिनेट में एक विधायक ऐसा भी है, जिसके पास अपना पक्का मकान नहीं है। राजस्थान सरकार के मंत्रिमंडल में जगह बनाने वाले बाबूलाल खराडी के परिवार में उनकी दो पत्नी है और तो और उनकी दोनों पत्नी साथ ही रहती है। उनके दो बेटे

और दो बेटियां हैं। चारों बच्चों की शादी हो चुकी है। सबसे बडे बेटा देवेन्द्र खराडी और प्रदुमन खराडी फिलहाल खेती का काम करते हैं। बाबूलाल खराडी के पास एक ट्रेक्टर और एक स्कॉर्पियो गाडी है। खास बात ये है कि चौथी बार विधायक बने खराडी आज भी केलूपोश मकान में रहते हैं।

खराडी के पास अपना पक्का मकान नहीं है। उनकी इस सादगी को लेकर भाजपा के कई बडे नेता तारीफ कर चुके हैं। जिनमें पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया, प्रदेश प्रभारी विजिया राहटकर सहित कई नेता उनके घर पहुंचे थे। खराडी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खंड कार्यवाहक भी रह चुके हैं।

विधायक बनने से पहले वे खंड कार्यवाहक रहते हुए निजि स्कूल में बतौर शिक्षक पढाते थे। जिसके बाद वे वनवासी कल्याण परिषद द्वारा संचालित स्कूलों के सुपरवाइजर बने थे। खराडी के काम और उनकी सादगी को देखते हुए भाजपा ने उन्हें 1987 में कोटडा कोटडा मंडल युवा मोर्चा अध्यक्ष बनाया था। जो उनकी राजनीति का टर्निंग प्वाइंट था।

शनि का संकट

राजेश सेन

सूर्य पुत्र शनिदेव न्यायप्रियता के देवता हैं। वे सभी को समान दृष्टि से देखते हैं। कभी अन्याय पसंद नहीं करते। सुना है कि इन दिनों वे खुद की 'साढ़े-साती' के फेर में उलझ के रह गए हैं। स्वयं न्याय के देवता पर स्त्रियों का 'अढैया' वक्र-दृष्टि गढ़ाकर बैठ गया है। चंद समानता पसंद आज़ाद-ख्याल की स्त्रियां उन पर तेल कर्मकांड को लेकर केंद्रित हो गई हैं। अब शनिदेव धर्म संकट में हैं कि परम्पराओं का क्या होगा? अव्वल तो वे ठहरे एक ब्रह्मचारी देवता। भक्तों की मान्यताओं के अनुसार वे महिलाओं के हाथों तेल आखिर कैसे ग्रहण करें?

शनिदेव ऊहापोह की स्थिति में हैं कि मैं तो खुद संसार में न्याय करता हूं और ये भक्तगण मुझे ही न्याय के कठघरे में खड़ा करने पर उतारू हो गए हैं। कुछ सयानों ने तो शनिदेव को भगवान ही मानने से इनकार कर दिया है। उनके अनुसार शनि तो सूर्य की परिक्रमा करते हुए एक ग्रह मात्र हैं। ये लो, कर लो बात। यहां तो शनिदेव की देवता वाली डिग्री ही खतरे में पड़ गई है। मगर अब क्या करें। प्रकृति का न्यायकर्ता खुद जनता के न्याय के कठघरे में खड़ा है। स्त्रियों के हठ के आगे अच्छे-अच्छे कठघरे में हाजिर हो जाते हैं।

शनिदेव की चिंता का कारण यह नहीं है कि वे न्याय करने से डरते हैं। यह भी नहीं कि वे न्याय नहीं कर सकते। बल्कि यह है कि बात-बेबात तिल का ताड़ बना देने वाली इन तुच्छ मानवीय फ़ितरतों से भला कौन पार पा सकेगा। तिस पर ये मीडिया वाले चार धर्म के ठेकेदार बाबाओं को बैठाकर बहस में कपड़े तक उतरवाने में कई कोर-कसर नहीं छोड़ेंगे, सो अलग। आज स्त्रियां भड़की हैं, और पता नहीं भड़की भी हैं या कि फिर भड़काई गई हैं। कलयुग में देवी-देवता भी 'आभासी-साजिशों' से कभी महफूज थोड़े ही न होते हैं। अब इस छीछालेदर से तो मौन ही भला। ये सोचकर शनिदेव ने अपना न्याय-दंड 'रेस्ट-मोड' पर डाल दिया है और स्वयं गहन चिंतन की मुद्रा में आ गए हैं।

वे सोच में पड़ गए हैं कि स्त्रियां भी अगर पुरुषों के समान मुझे तेल चढ़ा देती हैं तो आखिर हर्ज क्या है। सवाल भावनाओं की अभिव्यक्ति का ही तो है। इसमें धर्म के ठेकेदारों को भला क्या आपत्ति हो सकती है! और रही बात मान्यताओं और परंपराओं की तो किस शास्त्र या पुराण में लिखा है कि महिलाएं शनिदेव को स्पर्श या तेल अर्पित नहीं कर सकतीं? मगर इन सबसे इतर चंद तटस्थताभावी सयाने-गुणीजन ये कयास लगाते पाए गए हैं कि जो कुछ भी घट रहा है, वह नियति और शनिदेव की माया का ही बिम्ब-मात्र है। ये समूचा घटनाक्रम स्त्रियों के समान अधिकार के हक में न्यायप्रिय शनिदेव का एक उपक्रम ही तो है।

जो कहें स्याही के रंग

शमीम शर्मा

एक ज़माना था जब स्याही काले रंग की ही हुआ करती थी। गांवों में आज भी काजल को स्याही कहते हैं। किसी के काले रंग की उपमा तवे जैसा काला स्याह कहकर की जाती है। कृष्ण के काले रंग पर तो ना जाने कितनी ही गोपियां फिदा हुईं? 'काला शाह काला, मेरा काला है सरदार, गोरयां नूं दफा करो' लोकगीत गाकर औरतों ने स्याह रंग के मर्दों को सम्मान दिया। फिर यह समझ नहीं आता कि किसी औरत को नेता के मुंह पर स्याही फेंकने की क्या ज़रूरत है? जबकि आमतौर से कुछ नेताओं का मुंह तो काले कारनामों के कारण पहले से ही काला होता है। कहते हैं कि हर चेहरा अपने आप में एक किताब होता है। चेहरों को पढ़ा जाता है ना कि स्याही फेंकी जाती है। स्याही का रिश्ता तो कागज़ से है जो अमिट है। वाल्मीकि और कालिदास जैसों की स्याही में डूबी कलम से जो कुछ निकला वह अमर हो गया। कबीर जैसे ऐसे भी हैं जिन्होंने मसि-कागद को छुए बिना ही स्याही की दुनिया में अपना नाम स्वर्णिम स्याही से लिखवा लिया। कहते हैं कि जब कृष्ण ने निर्गुण का सन्देश लिखकर उद्धव के हाथ एक खत गोपियों के पास भेजा तो उसे पढ़ने की होड़ में छीनाझपटी तो हुई सो हुई पर जिस गोपी ने उस पत्र को पढ़ना शुरू किया तो उसकी आंखों से आंसुओं की अविरल धारा फूट पड़ी। आंसुओं से भीगकर खत की सारी स्याही कागज़ पर फैल गई। और इस पर सूरदास ने कमाल की बात कही- हो गई स्याम स्याम की पाती। और इधर आजकल की गोपी स्याही फेंककर वाहवाही लूटने में लगी है। क्या ही गज़ब होता अगर वह इस स्याही से लोगों की काली करतूतों को सामने लाती और अपने आपको दूध का धुला कहने वालों के भीतर की स्याही को उघाड़ती।

अब स्याही शब्द का अर्थ विस्तार हो चुका है और स्याही ने लाल, नीला, हरा आदि अनेक रंग धारण कर लिये हैं। इम्तहान देने वालों की स्याही नीली है, परीक्षा लेने वालों की लाल और अफसरों की स्याही हरी है। परीक्षा और परीक्षकों की स्याही का रंग लाल-नीला क्यों है, यह तो राम जाने पर अफसरों की हरी स्याही यही बताती है कि हरे रंग के साइन की कीमत उन्हें ताउम्र हराभरा रखती है। काली स्याही तो अखबारों ने कब्ज़े में ले रखी है। मतलब साफ है कि अखबार समाज के एक-एक काले कारनामे को उजागर करता है।

येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम्।
येना समुद्रमाविथा तमीमहे॥

(ऋग्वेद ८-१२-२)

हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ! जिस आनंद से आपने आत्मा को दस इंद्रियों के साथ जोड़ा है। जिस आनंद से वायु और ऊर्जा को बिना रोध के चलाते हो। जिस आनंद से सूर्य की किरणों का विकिरण करते हो और जल के महासागर को संचालित करते हो। हम आपके उसी आनंद का आह्वान करते हैं।

भारतीय पुनर्जागरण के जनक राजा राम मोहन राय

ज्ञानेन्द्र रावत

अपने जीवन को मानव कल्याण हेतु समर्पित करने, सभी धर्मों के मध्य समन्वय स्थापित कर एक नये बुद्धिवादी संप्रदाय की स्थापना करने वाले महान समाज-सुधारक और भारतीय पुनर्जागरण के जनक थे राजा राम मोहन राय। परिस्थितियों ने उन्हें बंगाल के पुनर्जागरण के अग्रणी नेता, अन्वेषक व मार्गदर्शक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनका जन्म पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के ग्राम राधानगर में 22 मई, सन् 1772 में एक संभ्रांत परिवार में हुआ था। इनके पिता रमाकांत राय और मां श्रीमती तारिणी देवी कट्टर हिंदू धर्मावलम्बी और परंपरावादी थे। राजा राम मोहन राय का जीवन संघर्षों की एक लम्बी शृंखला है। उन्हें अपने ही घर-परिवार में, तो कभी परंपरावादी-आडम्बर और मूर्ति-पूजकों के विरोध का सामना करना पड़ा। कभी पिता के आदेश से घर से बाहर निकलने का दंश झेलना पड़ा, तो कभी नौकरी से इस्तीफा देना पड़ा। कभी अपने विचारों के कारण समाज, परिवार व आत्मीयजनों के आरोपों-लांछनों का सामना करना पड़ा। कभी तिब्बत में बौद्ध-पुरोहितों से मतभेदों के चलते किसी तरह वे वहां से भागकर अपनी जान की रक्षा कर पाये।

दरअसल, उनके सम्पूर्ण जीवन को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है। पहला भाग जन्म से लेकर सन् 1800 तक यानी 28 वर्षों का है, जिसे बाल्यकाल व अध्ययन काल कह सकते हैं। लेकिन इस काल में ही जिन विचारों का इनके अंतस में विकास हुआ, उसका प्रभाव उनमें जीवनपर्यन्त बना रहा। सन् 1800 से 1812 तक का काल शासकीय सेवा व अंग्रेजी, ग्रीक, लैटिन और हिब्रू आदि भाषाओं के ज्ञान, पाश्चात्य दर्शन और विज्ञान के अध्ययन के लिए जाना जाता है। इन बारह वर्षों में 10 वर्ष इन्होंने रंगपुर कलक्टरी में नौकरी के रूप में बिताये और मात्र 40 वर्ष की अवस्था में धर्म और समाज की सेवा की खातिर इन्होंने रंगपुर कलक्टरी के दीवान पद से इस्तीफा दे दिया। जीवन के अंत के तीसरे भाग में यानी 1812 से 1833 तक के 21 वर्षों के शुरुआती 18 वर्ष कलकत्ता में एक कर्मयोगी के रूप में, जिसमें समाज सुधार व धर्म के कार्य में इन्होंने बिताये। अंत के तीन वर्ष इंग्लैंड, फ्रांस आदि यूरोप के अन्य देशों में बिताये। वहां भी उन्होंने अपने धार्मिक व दार्शनिक विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार ही नहीं किया, बल्कि उनकी महत्ता के बारे में व्याख्यान भी दिये। उन्हीं दिनों उनका स्वास्थ्य लगातार भाग-दौड़ के कारण गिरता चला गया और 27 सितम्बर, 1833 को ब्रिस्टल शहर में भारत का महान समाज सुधारक सदा-सदा के लिए सो गया।

राजा राममोहन राय की सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा के विरोधी, महिलाओं को समान अधिकार दिए जाने, विधवाओं के पुनर्विवाह और अंतर्जातीय विवाह के प्रबल समर्थक के रूप में ख्याति है। उनका दृढ़ मत था कि बहुपत्नी प्रथा समाज विरोधी है और पति की मृत्यु उपरांत उसकी पत्नी को ही उसकी संपत्ति का उत्तराधिकारी माना जाना चाहिए। सती प्रथा के विरुद्ध विद्रोह की आग उनके अन्दर घर में ही पनपी। कारण बड़े भाई जगमोहन राय की मृत्यु के उपरांत लाख समझाने और विरोध के बावजूद उनकी पत्नी का सती होना इनके दुख का कारण बना। इन्होंने उसी समय इस कुप्रथा के अंत का दृढ़ संकल्प कर लिया। इनके इस निश्चय से पुरातनपंथी परिवार और कट्टरपंथी इनके प्रबल विरोधी हो गए और कट्टरपंथियों ने तो इनकी हत्या का भी प्रयास किया। लेकिन इन्होंने सती प्रथा के खिलाफ अपने आंदोलन को न केवल जारी रखा, वेद और उपनिषदों का हवाला देकर यह सिद्ध भी किया कि यह सामाजिक कुरीति, सामाजिक अंध-विश्वासों का परिणाम है। यही नहीं, ब्रिटिश सरकार को अपने तर्कों से समझाने का प्रयास किया कि इस कुरीति का बने रहना उनके आदर्शों के लिए एक कलंक है, तब कहीं जाकर गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक ने 1827 में इस प्रथा को गैर-कानूनी करार दिया। कट्टरपंथी फिर भी चुप नहीं बैठे और उन्होंने इसके खिलाफ प्रिवी कौंसिल में अपील कर दी। इसे चुनौती मान राम मोहन राय 1831 में इंग्लैंड गए और प्रवर समिति के समक्ष अपने तर्कों, उदाहरणों के माध्यम से इस अधिनियम का समर्थन कर अंततः इसे स्वीकार करने पर ब्रिटिश सरकार को उन्होंने विवश कर दिया।

उन्होंने 1822 में सभी धर्मों के मध्य समन्वय स्थापित कर एक नये बुद्धिवादी समाज 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की, जिसमें सभी धर्मावलम्बियों के प्रवेश की स्वतंत्रता थी। सबसे बड़ी बात इस समाज की यह थी कि इसमें सभी धर्मों के महान आदर्शों का समावेश था। उनकी मान्यता थी कि भारतीय ऐसी राजनीतिक चेतना से अभिभूत हों, समृद्ध हों, जिससे वे पश्चिमी संस्थाओं का अनुसरण करने में समर्थ हों। इसके लिए उन्होंने पश्चिमी सभ्यता, संस्कृति, वैज्ञानिक ज्ञान से परिचित होने के लिए अंग्रेजी भाषा के ज्ञान व शिक्षा पर बल दिया। उनके संघर्ष के परिणाम स्वरूप ही विधवा विवाह आदि के अधिकार पाने में भारतीय नारी सफल हो सकी।

अश्लील वेबसाइटें: लाइलाज मर्ज की दुखती रग

ज्ञानेन्द्र रावत

अश्लील वेबसाइटों का दिनोंदिन बढ़ता कारोबार वर्तमान में एक ऐसी समस्या बन चुका है जिसका समाधान मौजूदा समय में आसान नहीं है। इससे जिस तेजी से समाज में विकृति बढ़ रही है, उसके परिणामस्वरूप हम अपनी संस्कृति, मान्यताएं, मर्यादा, नैतिकता, पाप-पुण्य सभी को भूलकर नग्नता की ओर बढ़े चले जा रहे हैं। यही वजह है कि समाज में विकृत सोच की साम्रगी तलाशने वालों की तादाद दिनोंदिन तेजी से बढ़ रही है।

सरकार का कहना है कि वह इस सम्बंध में प्रयास तो पूरे कर रही है लेकिन इंटरनेट पर पाबंदी लगा पाना बहुत मुश्किल काम है। जब तक एक साइट को ब्लॉक किया जाता है, दस नई साइट्स और खुल जाती हैं। कारण यह कि इन वेबसाइटों का प्रसारण विदेशों से होता है, जिनका सर्वर भारत में नहीं है। सरकार ने कोर्ट में कहा है कि वह चाइल्ड पोर्नोग्राफी पर सख्त है और इसे अपराध मानती है लेकिन अन्य वेबसाइटों को बंद करने से लोगों की निजता का उल्लंघन होगा। हम नैतिक संहिता नहीं बना सकते।

वैसे भी क्या अश्लील है और क्या नहीं, यह सरकार तय नहीं कर सकती। असलियत यह है कि अभिव्यक्ति की आजादी के अलम्बरदार भी यह मानते हैं कि इस पर पाबंदी लगाई जानी चाहिए लेकिन इसमें कामयाबी मिल पायेगी, वह उतनी आसान नहीं है, जितनी समझी जा रही है। इसका अहम कारण यह है कि सूचना तकनीक और इंटरनेट की तरक्की के पीछे पोर्नोग्राफी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। इस सम्बंध में ब्रिटेन के वैज्ञानिक प्रोफेसर हैरॉल्ड थिम्बलेबी ने दुनियाभर की इंटरनेट साइट्स का अध्ययन करने के बाद कहा कि कम्प्यूटर पर होने वाली अधिकांश खोजें पोर्नोग्राफिक सामग्री से सम्बंधित हैं। इसे रोकने वाले तथाकथित ताले भरोसेमंद नहीं हैं।

आज यह माना जाता है कि इंटरनेट पर 40 लाख से भी ज्यादा अश्लील साइट्स मौजूद हैं। 25 फीसदी से ज्यादा तो सर्च और 35 फीसदी से ज्यादा डाउनलोड सिर्फ पोर्नोग्राफी की होती है। इंटरनेट के मोबाइल पर आ जाने का नतीजा यह हुआ है कि अब अधिक से अधिक लोगों तक पोर्नोग्राफी ने अपनी पहुंच बना ली है। लगभग 90 फीसदी किशोरों तक पोर्नोग्राफी इंटरनेट के जरिये पहुंचती है। इसमें सबसे बड़ा खतरनाक पहलू बाल पोर्नोग्राफी का है।

चीन जैसे देश में इंटरनेट पर कड़ी सेंसरशिप है लेकिन एक तथ्य यह है कि इसके बावजूद दुनिया में इंटरनेट पोर्नोग्राफी उद्योग से होने वाली आय में सबसे ज्यादा हिस्सा चीन का है। इससे साबित होता है कि इस व्यवसाय ने देशों की सीमाओं को लांघ दिया है और इस पर हाल-फिलहाल में अंकुश की बात कल्पनातीत है। इसमें दो राय नहीं कि हमारे यहां विकृत मानसिकता व कामुक इच्छाओं वालों की कमी नहीं है। यही वजह है कि अश्लील फिल्मों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है। जहां तक सेक्स का सवाल है, सेक्स हमारे जीवन में कभी वर्जित नहीं रहा लेकिन उसके बारे में बात करना वर्जित रहा है। किंतु सामाजिक जीवन में मीडिया के बढ़ते प्रयोग ने इस स्थिति को बदल दिया है।

वयस्क मनोरंजन में दुनिया भर में सबसे आगे अमेरिका में यह वैध है। लेकिन इसमें बच्चों का इस्तेमाल अवैध करार दिया गया है। वहां अमेरिकी हर साल इस पर लगभग 15 अरब डालर खर्च करते हैं। इस उद्योग की विशालता का अंदाजा इसी बात से लग जाता है कि अकेले कैलीफोर्निया राज्य में इस उद्योग में लगभग एक लाख पचास हजार से भी ज्यादा लोग कार्यरत हैं। अमेरिका के चोटी के विशेषज्ञों का मानना है कि इंटरनेट सामाजिक रूप से विकृत करने, व्यर्थ और हिंसक संस्कृति पैदा करने का जरिया बनता जा रहा है। यह रिश्तों को बिगाड़ने में अहम भूमिका निबाह रहा है।

आज इसे रोकने की दिशा में कड़े कदम उठाये जाने जरूरी हैं। बिना सशक्त कानून के इसे रोक पाना आसान नहीं। इस मुद्दे पर सरकार और अदालत का सख्त होना बेहद जरूरी है।

तुम से न होगा!

सुरजीत सिंह

जब मौसम की ठंड में, पारे की शून्य में, शरीर की रजाई में घर वापसी हो जाए, तो ऐसे समय अच्छा-भला बंदा किसी तरुणी के दिल से ज्यादा, नहाने से जी चुराने लगता है। अत्याचार की इंतेहा तब होती है, जब परिवार की रायशुमारी उसे नहाने को मजबूर कर देती है। बाथरूम की ओर प्रस्थान करता बंदा दुनिया का सबसे निरीह प्राणी होता है। यह ऐसा काम है, जो रोज मन मारकर करना पड़ता है। अब मन मारकर सारी उम्र सिर्फ सरकारी नौकरी की जा सकती है! चौबीसों घंटे सरकार को कोसने वाला बंदा भी बाथरूम में विषय बदलकर अचानक मौसम को कोसने लगता है। मन में ऊलजलूल ख्याल आने लगते हैं। ऊंह, बड़े अच्छे दिन आए हैं। हाय! जितना नहाने के लिए फोर्स किया गया, उसका छटांक भी यदि एवरेस्ट के लिए किया होता तो आज वह बाथरूम में नहीं, एवरेस्ट पर खड़ा होता। लोटा भीरू दुविधा में पड़े होते हैं, तभी बाहर कैलाश खेर गाते सुनाई देते हैं-अल्लाह के बंदे हंस देज! अबे कैलाश खेर के बंदे, मजाक की भी हद होती है, कोई तुम पर एक लोटा डाल गाने को कहे तो! घायल की गति घायल जाने, फिर क्या कैलाश, क्या खेर भई!

जब लोटा सिर की ओर गमन करता है, हालत उस कबूतर जैसी हो जाती है, जो बिल्ली को आते देखकर आंखें बंद कर लेता है। कुछ बंदे जोर-जोर से हनुमान चालीसा का जाप करने लगते हैं, भूत-पिशाच निकट नहीं आवे, महावीर जब नाम सुनावेज अब इन स्नान आतंकितों को कौन समझाए कि लोटा भूत नहीं, वर्तमान होता है। ओम भूर्भुवःस्वः की ध्वनियां बाथरूम की दीवारों से टकराकर करुण पुकार में बदल जाती हैं। चीख-पुकार सुन देवी-देवता बाथरूम में जमा हो जाते हैं। घोर नास्तिक तक बाथरूम में चुपके से आस्तिक हो लेते हैं। बाहर निकलते ही कपड़ों के साथ पुनः नास्तिकता ओढ़ लेते हैं। जो लोग नहाते समय गाते हैं-ठंडे-ठंडे पानी से नहाना चाहिएज, दरअसल वे गाने की मार्फत पानी को पटा रहे होते हैं। अब पानी कोई गरीब का वोट थोड़े ही है, जो जरा सी पुचकार से रीझ जाएगा। इसी समय यदि टीवी पर आ रही फिल्म में जगीरा डायलॉग मार दे कि सब कुछ ले आओगे, मगर मेरे जैसा कमीनापन कहां से लाओगे, तो उससे भी बंदा हर्ट हो जाता है कि कोई उसका मजाक उड़ा रहा है, बर्खुरदार, गीजर तो ले आओगे, मगर नहाने के लिए जिगर कहां से लाओगे? बस, एक लोटे का सवाल है बाबा, इसे झेल जाएं, फिर तो बिना स्वर्ण भस्म खाये ही खोई जवानी वापस लौट आती है। बाथरूम से सद्य निकला बंदा अपने साहस को लेकर इतना मुदित होता है कि जी चाहता है, दो-चार को पकड़कर लोटा चैलेंज के लिए नॉमिनेट कर दे! फिर यह सोचकर रुक जाता है कि जाने दो यारो, तुमसे नहीं होगा!

वेब मीडिया में बनाए अपना कैरियर

युवाओं की पसंद अब इंटरनेट बन गया है। वह देश दुनिया से जुड़े रहने के लिए विभिन्न प्रकार की खबरों से भी जुड़ा रहना चाहता है इसके लिए वेब मीडिया अच्छा माध्यम है। जहां हर सेकेण्ड की खबर होती है। अगर आप भी वेब मीडिया में कैरियर बनाने के इच्छुक है तो भारत में बढ़ते संचार साधनों से पत्रकारिता के क्षेत्र में भी कैरियर बनाने के अवसर खुलते जा रहे हैं। वहीं समाचार चैनलोंए अखबारों की संख्या बढ़ोत्तरी होती जा रही है। पत्रकारित्रा पहले जहां अखबारों, पुस्तकों में हुआ करती थी वहीं इंटरनेट के बढ़ते प्रचलन के बीच वेब पत्रकारिता का जन्म हुआ। इंटरनेट बढ़ते समाचार पोर्टलों से वेब पत्रकारिता में योग्य पत्रकारों की कमी बनी हुई है। वेब पत्रकारिता का कार्य भी अखबारों, पत्रिकाओं में खबरों के चयन, संपादन या लेखक होते हैं। यही कार्य इंटरनेट पर किया जाता है। पहले जहां इंटरनेट कम्प्यूटर तक सीमित था वहीं आज नई तकनीकों से लैस मोबाइलों में भी इंटरनेट का चलन बढ़ता जा रहा।

औरों को नसीहत, खुद मियां फजीहत

शमीम शर्मा

कक्षा में अध्यापिका ने पढ़ाते हुए कहा कि एक दिन ऐसा आएगा जब इस जमीन पर पानी नहीं रहेगा और सब जीव-जन्तु नष्ट हो जायेंगे और पूरी पृथ्वी ही तबाह हो जायेगी तो एक भोलेभाले बच्चे ने पूछा- मैडम जी! उस दिन ट्यूशन आना है क्या? इसे कहते हैं- आशा। बड़े बूढ़े कहते हैं कि जब हमारा सब कुछ लुट जाता है तो भी उम्मीद बची रहती है। दुनियाभर की लैब्ज में कोरोना के टीके की खोज में वैज्ञानिकों ने पूरी ताकत झोंक रखी है। जो रोगी कोरोना के चंगुल से बचकर अपने घर आ रहे हैं, वे यह चमत्कार अपनी विल-पावर और आशाओं के बल पर कर पा रहे हैं क्योंकि दवाई तो अभी तक कोरोना की आई ही नहीं है। एक कहावत है कि यदि शिकार गीदड़ का भी करना हो तो शेर के शिकार का सामान होना चाहिये। कोरोना के केस में फर्क इतना है कि इस बार शिकार गीदड़ का नहीं, शेर का ही है। अच्छी बात यह है कि सभी देशों ने इसे पछाड़ने के लिये पूरा दमखम लगा रखा है। उम्मीद है कि किसी भी दिन शेर चंगुल में फंस सकता है। मास्क न पहनने वालों पर गिरने वाली गाज को सरकार ने भारी कर दिया है। इस पर एक मनचले का कहना है कि पत्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़, मास्क बांधे कोरोना रुके तो मैं बांधू तिरपाल। पर मास्क पहनने का एक नुकसान तो हुआ है कि अब पता ही नहीं चलता कि किसने मुंह फुला रखा है। आज एक प्यारा सा संदेश मिला, जिसमें एक भक्त कह रहा है- हे भगवन! टीका आने तक टिकाये रखना। भगवान ने उत्तर दिया- यदि एक स्थान पर टिके रहोगे तो टीका आने तक अवश्य टिके रहोगे। पर घर में बैठे-बैठे रेलवे की बोगी में बैठने जैसी फिलिंग आ रही है कि बस टायलेट के लिये उठना है और फिर वहीं आकर बैठ जाना है। जिस तरह यदि कोई हम से कार मांग कर ले जाये तो पेट्रोल-डीजल डलवाये या न डलवाये पर आकर नसीहत जरूर देगा कि आपकी गाड़ी सर्विस मांग रही है। उसी तरह सब लोग मास्क पहनने और घर से बाहर न जाने की नसीहत दे रहे हैं पर खुद फॉलो नहीं करते।

खुद को दर्पण में देख निकालें दूसरों के खोट

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

एक बड़ा ही मौजू सा शे'र है -दिल में है तस्वीरे यार, जब जरा गर्दन झुकाई, देख ली। सच भी यही है कि ईश्वर ने हम सभी को बाहर की दो आंखों के साथ ही एक तीसरी आंख भी दी है, जिसे हम अन्तर्मन कहते हैं। हमारा यह अन्तर्मन हमें सदैव सच दिखाता है। हमारे आदरणीय कहा करते थे कि अगर तुमने किसी को धोखा दिया है और तुम्हें लगता है कि किसी को भी पता नहीं, तो यह तुम्हारी भूल है।

आज यह आम बात हो गई है कि हर आदमी दूसरे की बुराई बड़ी आसानी से देख लेता है। आज संसार में हर कोई खुद को न देखकर, दूसरों को ही क्यों आंकता है? इस प्रश्न का उत्तर एक बोधकथा में इस प्रकार दिया गया है- एक गुरुकुल के आचार्य अपने शिष्य की सेवा से बहुत प्रसन्न हुए। विद्या पूरी होने के बाद जब शिष्य विदा होने लगा तो गुरु ने उसे आशीर्वाद के रूप में एक दर्पण दिया। उस दिव्य दर्पण में किसी भी व्यक्ति के मन के भावों को दर्शाने की बड़ी अनूठी क्षमता थी। शिष्य ने सोचा कि चलने से पहले क्यों न दर्पण की क्षमता की जांच ही कर ली जाए?

परीक्षा लेने की जल्दबाजी में उसने गुरु द्वारा दिए दर्पण का मुंह सबसे पहले गुरुजी के सामने कर दिया। शिष्य को झटका लगा। दर्पण दर्शा रहा था कि गुरुजी के हृदय में मोह, अहंकार, क्रोध आदि दुर्गुण स्पष्ट दिख रहे हैं। अरे, मेरे आदर्श, मेरे गुरुजी, इतने अवगुणों से भरे हुए हैं? यह सोचकर शिष्य बहुत दुखी हुआ। दुखी मन से वह दर्पण लेकर गुरुकुल से रवाना हुआ तो रास्ते भर मन में एक ही बात चलती रही कि जिन गुरुजी को मैं एक आदर्श पुरुष समझता था, उन्हें दर्पण ने तो कुछ और ही बता दिया है।

उसे जो भी मिलता, वह उसी की परीक्षा ले लेता। उसने अन्य परिचितों के सामने दर्पण रखकर उनकी परीक्षा ली। सबके हृदय में उसे कोई न कोई दुर्गुण अवश्य दिखाई दिया। वह सोच रहा था कि संसार में सब इतने बुरे क्यों हो गए हैं? जो दिखते हैं, वे वैसे हैं नहीं। इन्हीं निराशा से भरे विचारों में डूबा हुआ, दुखी मन से वह अपने घर पहुंच गया। उसे अपने माता-पिता का ध्यान आया। सोचा आज उनकी भी परीक्षा की जाए।

उसने दर्पण से माता-पिता की भी परीक्षा कर ली। उनके हृदय में भी कोई न कोई दुर्गुण उसने देखा। अब उस युवक के मन की बेचैनी बहुत बढ़ चुकी थी। उसने दर्पण उठाया और चल दिया गुरुकुल की ओर। जाकर अपने गुरुजी के सामने खड़ा हो गया। गुरुजी उसके मन की बेचैनी देखकर सारी बात का अंदाजा लगा ही चुके थे। चेले ने गुरुजी से विनम्रतापूर्वक कहा- गुरुदेव, मैंने आपके दिए दर्पण की मदद से देखा कि सबके दिलों में तरह-तरह के दोष हैं। कोई भी दोषरहित सज्जन मुझे अभी तक क्यों नहीं दिखा? इससे मेरा मन बड़ा ही व्याकुल है।

गुरुजी ने उस दर्पण का रुख शिष्य की ओर कर दिया। शिष्य दंग रह गया। उसके मन के प्रत्येक कोने में राग-द्वेष, अहंकार, क्रोध जैसे दुर्गुण भरे पड़े थे। उसके मन का ऐसा कोई कोना ऐसा बचा ही नहीं था, जो दुर्गुणों से रहित निर्मल हो। गुरुजी बोले- बेटा, यह दर्पण मैंने तुम्हें अपने दुर्गुण देख कर, जीवन में सुधार लाने के लिए दिया था, न कि दूसरों के दुर्गुण खोजने के लिए। जितना समय तुमने दूसरों के दुर्गुण खोजने में लगाया, उतना समय यदि तुमने स्वयं को सुधारने में लगाया होता तो अब तक तुम्हारा व्यक्तित्व पूरी तरह निखर चुका होता।

तब गुरु ने कहा कि हर मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि वह दूसरों के दुर्गुणों को जानने में ज्यादा रुचि रखता है, स्वयं को सुधारने के बारे में कभी नहीं सोचता। इस दर्पण की यही सीख है, जो तुम नहीं समझ सके। निःसंदेह कितनी बड़ी बात गुरु ने कही है। बेशक, संसार में दुर्गुणों की भरमार है, परंतु हममें भी कम अवगुण तो नहीं हैं? सोचिए, किसी और में दोष खोजने से बड़ा और कोई अवगुण क्या हो सकता है?

औरों को सुख देकर हासिल सुकून

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

आज हम भौतिक सुखों के अंबार में रहकर भी जाने क्यों, मन के सुखों से बहुत दूर हो गए हैं। हमारे पास सब कुछ होते हुए भी होंठों पर मुस्कुराहट नहीं आ पाती, बल्कि हर व्यक्ति किसी न किसी तनाव और उलझन में खुद को फंसा हुआ पा रहा है।

आपने मनोचिकित्सकों से सुना होगा कि उनके पास धनाढ्य लोग यही शिकायत लेकर आते हैं कि उन्हें रात को नींद नहीं आती। अपार धन-संपदा होने पर भी आज लोग गोलियां खा-खा कर नींद का सुख लेने को बाध्य हो गए हैं तो कविवर रहीम का यह दोहा बरबस याद आता है :-

'गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतन-धन खान।

जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान।'

सच बात तो यही है कि हमारे जीवन से 'संतोष-धन' कहीं खो गया है और हमने बैंक-लॉकरों में सोना-चांदी और नोटों के बंडल बन्द करके रातों की नींद गंवा दी है। आज एक आत्मीय ने बहुत ही प्यारी और मन को छू लेने वाली कहानी भेजी है, जो यूं है- 'एक धनी औरत महंगे कपड़े और आभूषणों में सजी-धजी अपने मनोचिकित्सक के पास गई और बोली- 'डॉ. साहब! मुझे लगता है कि मेरा पूरा जीवन बेकार है, उसका कोई अर्थ नहीं है। क्या आप मेरी खुशियां ढूंढ़ने में मेरी मदद करेंगे?' इस पर उस मनोचिकित्सक ने एक बूढ़ी औरत को बुलाया, जो वहां साफ़-सफाई का काम करती थी और उस अमीर औरत से बोला-'मैं इस बूढ़ी औरत से तुम्हें यह बताने के लिए कहूंगा कि कैसे उसने अपने जीवन में खुशियां ढूंढ़ी हैं। मैं चाहता हूं कि आप उसे ध्यान से सुनें।'

उस बूढ़ी औरत ने अपना झाड़ू नीचे रखा और कुर्सी पर बैठ कर बताने लगी- 'मेरे पति की मलेरिया से मृत्यु हो गई और उसके तीन महीने बाद ही मेरे इकलौते बेटे की भी सड़क हादसे में मौत हो गई। मेरे पास कोई नहीं था और मेरे जीवन में कुछ नहीं बचा था। मैं सो नहीं पाती थी, खा नहीं पाती थी। उदासी के दौर में तो मैंने मुस्कुराना तक बंद कर दिया था। मैं अपने जीवन को समाप्त करने की तरकीबें सोचने लगी थी। तभी एक दिन, एक छोटा-सा बिल्ली का बच्चा, जाने कहां से आकर, मेरे पीछे लग गया। बाहर बहुत ठंड थी, इसलिए मैंने उस बच्चे को घर में अंदर आने दिया। फिर उस बिल्ली के बच्चे के लिए थोड़े से दूध का इंतजाम किया और मैंने देखा कि वह सारी प्लेट सफाचट कर गया। फिर वह मेरे पैरों से लिपट गया और मेरे पैरों को प्यार से चाटने लगा।

एक जादू-सा हुआ और उस दिन बहुत महीनों के बाद मैं मुस्कुराई। तब मैंने सोचा, यदि इस बिल्ली के बच्चे की सहायता करने से मुझे खुशी मिल सकती है तो हो सकता है कि दूसरों के लिए कुछ करके मुझे और भी ज्यादा खुशी मिले। इसलिए अगले दिन मैं अपने बीमार पड़ोसी के लिए कुछ बिस्किट्स बनाकर ले गई और कुछ देर उसके पास बैठकर उसका हाल-चाल पूछा। अब तो हर दिन मैं कुछ नया और कुछ ऐसा करने लगी थी, जिसे दूसरों को खुशी मिले और उन्हें खुश देख कर मुझे भी बेहद खुशी मिलती थी। वह औरत प्रसन्न होकर बोली-'आज, मैंने जीवन की सारी खुशियां ढूंढ़ी हैं, दूसरों को खुशियां देकर।'

बूढ़ी औरत की यह बात सुनकर वह अमीर औरत रोने लगी। उसके पास वह सब कुछ था जो वह पैसे से खरीद सकती थी लेकिन उसने वह मूल्यवान चीज खो दी थी जो पैसे से नहीं खरीदी जा सकती।

सच मानिए, हमारा जीवन इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हम खुद कितने खुश हैं, अपितु इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी वजह से समाज में और कितने लोग खुश हैं? तो आइये आज हम सब यह संकल्प लें हम भी अपने आसपास किसी न किसी की खुशी का कारण बनें। अगर आप एक अध्यापक हैं और जब आप मुस्कुराते हुए कक्षा में प्रवेश करेंगे तो एक जादू आप देखेंगे कि सारे बच्चों के चेहरों पर मुस्कान छा जाएगी। अगर आप डॉक्टर हैं और मुस्कराते हुए मरीज का इलाज करते हैं तो मरीज का आत्मविश्वास दोगुना हो जायेगा और आपके मुखमंडल की मुस्कान आसपास के वातावरण को खुशनुमा बना देगी।

टिकाऊ-सस्ते माल का राष्ट्रवाद

आलोक पुराणिक

बहुत अरसे बाद अंबेसडर कार दिखी, सड़क पर चलती हुई, अचानक से दिलीप कुमार याद आ गये। दिलीप कुमार का बहुत भारी जलवा रहा है फिल्मों में, वैसा जलवा अंबेसडर कार का रहा है। लाइन लगाकर लोग खरीदते थे। हालांकि एक वक्त में लाइन तो लगभग हर चीज के लिए लगा करती थी। फोन के लिए भी लाइन लगती थी और फोन के बिल की पेमेंट करने के लिए भी लाइन लगती थी।

नयी पीढ़ी के लिए कारों के लिए कई ब्रांड हैं। पुराने लोग बता सकते हैं कि कारों के बहुत गिने-चुने ब्रांड होते थे। अंबेसडर कारों का जलवा था, पुरानी फिल्मों में टॉप क्लास स्मगलर और नेता अफसर वगैरह सब अंबेसडर में चलते थे।

एक कार का इश्तिहार था-करीब 30 लाख रुपये की कार थी, नाम इस कार का ब्रिटिश जैसा था, पर यह कंपनी चाइनीज है। चाइनीज बहुत शाणे लोग हैं, ब्रिटिश भेष में घुसते हैं। खैर, इंडिया की पब्लिक को तो चीनी भेष से भी चिंता नहीं है। एक चीनी मोबाइल कंपनी बता चुकी है कि एक हफ्ते में इसने पचास लाख फोन बेच लिये। ब्रिटिश हो या चाइनीज या इंडियन पब्लिक को सस्ता और टिकाऊ माल चाहिए। स्वदेशी का हल्ला काटने वाले भारतीय उद्यमियों को भारतीय जनता से अपेक्षा यह है कि वह स्वदेशी के नाम पर घटिया और महंगा खरीदे। पब्लिक बहुतै शाणी है वह गांधीजी की बात मानकर दे दनादन खादी खरीदती है, पर डिस्काउंट पर मिले तो। स्वदेशी सस्ता और टिकाऊ मिले तो पब्लिक स्वदेशी हो जाती है, गांधीवादी तक हो जाती है। वरना तो पब्लिक को चाइनीज होने में दो सेकंड न लगता। चाइनीज ब्रिटिश धज में आते हैं। चाइनीज का मामला बहुत गहरा है, घनघोर भारतीय लगने वाले ब्रांड को तलाशे तो वह भी चाइनीज निकल सकता है। चाइनीज क्रिकेट न खेलते पर क्रिकेट के टूर्नामेंट स्पांसर करने में गुरेज न करते। खैर, अंबेसडर देखकर दिलीप कुमार याद आये। दोनों की बाजार में इन दिनों वह पूछ नहीं है। अंबेसडर एक वक्त धुआंधार चलती थी। धुआंधार चलने की एक वजह यह थी कि कार बनाने का लाइसेंस कुछ ही कंपनियों को मिला हुआ था। कम कंपनियों को लाइसेंस मिले और कंपीटिशन न हो, तो कुछ भी चल सकता है। सरकारी फोन भी उन दिनों खूब चलते थे, क्योंकि वे ही चल सकते थे, किसी भी प्राइवेट कंपनी को फोन सर्विस चलाने का लाइसेंस हासिल नहीं था। कुछ न दिखे टीवी पर, तो बंदा कृषि दर्शन तक देख सकता था, रोज। मानने को कुछ भी माना जा सकता है, पर यह जरूर माना जाना चाहिए कि दिलीप कुमार सुपर एक्टर थे, पर यह बात अंबेसडर के बारे में नहीं कही जा सकती है कि यह सुपर कार थी।

इंसानियत की परवाज़

प्रवीण चोपड़ा

एक मरीज़ का चेकअप कर रहा था। तभी कमरे के बाहर पक्षियों की तेज़ आवाज़ें आईं। ऐसी आवाज़ें अक्सर तभी सुनाई देती हैं जब कोई पक्षी किसी मुश्किल में हो। एक परिंदा टेलीफोन की तार में अटकी डोर में उलझ कर उलटा लटक गया। लगा चीखने। आवाज़ सुन कुछ और परिंदे आ गये। वे भी चीखने-चिल्लाने लगे। इत्तेफ़ाक देखिए कि चंद कदम की दूरी पर सरकारी एंबुलेंस खड़ी रहती है। उसके ड्राइवर ने परिंदे को देखा तो झट से पक्षी को सहारा देने के लिए लपका। इतने में मेरे अटेंडेंट ने भी खिड़की खोल दी थी। उस एंबुलेंस वाले ने उस परिंदे को सहारा देने लिए पकड़ लिया था। मेरे अटैंडेंट ने ताकीद की, चाइनीज मांझा है, खींचने से पंछी का पैर कट जाएगा। मैं ब्लेड देता हूं। किसी तरह पंछी को धागों के जंजाल से तो मुक्त करा लिया गया लेकिन उसके पैरों के इर्द-गिर्द मांझा इतनी पेचीदगी से कस गया था कि उसे छुड़वाना भी एक चैलेंज था। अब तक परिंदा शांत हो चुका था ड्राइवर ने उस परिंदे को बड़े प्यार से पकड़ रखा था। ज्मैं और अटैंडेंट डोर को पैरों से अलग करने में लगे हुए थे। लो जी, कट गये धागे सारे इतने में मैं एक गिलास में पानी लाया और ग्रिल के अंदर से ही गिलास बाहर किया और परिंदे की चोंच उसमें डुबो दी गई कि परवाज़ भरने से पहले दो बूंद पानी पी ले। हम लोग खुद भी तो ऐसे मौकों पर बदहवास हो जाते हैं बस, अब उससे विदा लेने का समय था। यह तसल्ली तो थी कि उसके पैर सही सलामत हैं। ड्राइवर ने उसे जैसे ही हवा में छोड़ा, देखते ही देखते वह हवा से बातें करने लगा। और जैसे ही उसने उड़ान भरी उसके साथी जो इधर-उधर उसका इंतज़ार कर रहे थे, वे भी उसकी आज़ादी में शरीक हो गये उसकी परवाज़ देखकर बड़ी खुशी हुई। ख्याल आया कि परिंदे की चोट देखकर हम सब इकट्ठा हो गये अगर हम सब लोग इतने ही दयालु-कृपालु हैं तो फिर समाज में इतनी मार-काट, लूट-पाट, काट-फाड़ कौन कर रहा है किसी आदमी को काटने-गिराने में हम लोगों को क्या रत्ती भर दया नहीं आती क्या हो जाता है हम लोगों को जब हम भीड़ का हिस्सा बन कर बस्तियां जला देते हैं, भीड़तंत्र का हिस्सा बनना हमें बंद करना होगा, वरना यहां कुछ नहीं बचेगा बस, धधकते तंदूरों पर सियासी लच्छेदार परांठे लगते रहेंगे .काश! हम सब सुधर जाएं

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

क्या खुबानी खाने के फायदे जानते हैं आप ? दूर रहेंगी कई बीमारियां!

खुबानी या एप्रीकॉट एक सुखा ड्राई फ्रूट्स होता है। इस ड्राईफ्रूट्स के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं लेकिन इसके फायदे गजब के होते हैं। इसमें विटामिन ए, बी, सी और ई प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके अलावा पोटेशियम, मैग्नीशियम, कॉपर, फॉस्फोरस जैसे खनिज लवण तथा फाइबर भी खुबानी में मौजूद होते हैं। ये सभी पोषक तत्व हमारे शरीर के लिए बेहद लाभदायक होते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, सर्दियों में रोजाना पांच से छह खुबानी खाना काफी है। खुबानी की तासीर गर्म होता है। यह शरीर को अंदर से गर्म रखती है और सर्दी-जुकाम से बचाती है। सर्दियों में खुबानी खाने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और बीमारियों से लडने में मदद मिलती है। आइए जातने हैं यहां खुबानी के फायदे।

आइए जानते हैं खुबानी कब खाना चाहिए

खुबानी के इतने सारे फायदे हैं कि अगर इस रोजाना अपनी डाइट में शामिल किया जाए तो आँखों की रोशनी से लेकर कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से भी बचा जा सकता है। रोजाना केवल 5-6 खुबानी खाना ही प्राप्त होती है। इसे खाली पेट या फिर नाश्ते के साथ लिया जा सकता है। दोनों समय इसे खाने के कई फायदे हैं।

हृदय रोगों के लिए फायदेमंद

खुबानी में कई पोषक तत्व पाए जाते हैं जो हृदय स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। खुबानी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे विटामिन सी, विटामिन ई, बीटा कैरोटीन, लाइकोपीन आदि फ्री रेडिकल्स के प्रभाव को कम करते हैं जो हृदय रोगों का एक प्रमुख कारण हैं। इसके अलावा, खुबानी में उच्च मात्रा में फाइबर भी पाया जाता है। फाइबर एलडीएल यानि बुरे कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है जो एथेरोस्क्लेरोसिस (धमनियों का संकरा होना) का एक प्रमुख कारक है।

डायबिटीज के लिए फायदेमंद

खुबानी मधुमेह या डायबिटीज जैसी बीमारियों से लडने में बहुत प्रभावी है। इसका कारण यह है कि खुबानी का ग्लाइसेमिक इंडेक्स बहुत कम होता है। इसलिए यह डायबिटीज मरीज़ों को अपना ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल में रखने में मदद करता है। रोजाना खाने से इसके कई फायदे मिलते हैं।

पाचन के लिए फायदेमंद

खुबानी में फाइबर पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है। इसमें में कैलोरी कम और फाइबर ज्यादा होता है जो भूख कम करता है और वजन कम करने में भी मदद करता है।

कैंसर में फायदेमंद

खुबानी में पाए जाने वाले फाइटोकेमिकल्स कैंसरोगेनेसिस को रोकने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, खुबानी में मौजूद विटामिन ए, सी और ई भी शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो फ्री रेडिकल्स से लड?र कोशिकाओं की रक्षा करते हैं।

शब्द सामर्थ्य -047

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. चौड़ी और सपाट जमीन, रणभूमि 3. स्वरग्राम, संगीत के सात स्वरों का समूह 6. धूल का कण, किसी वस्तु का सूक्ष्मकण, धूल 7. हिम्मत, सामर्थ्य 8. अभ्यर्थना, रिसेप्शन, यथा अवसर पर पूछे जाने वाला मंगल कुशल 9. आपस का करार, निबटारा 10. वरदान, दुल्हा 12. भोग, ऐश्वर्य 13. कीमत, मूल्य 14. एक वाद्ययंत्र जिसे सपेरे बजाते हैं 16. समता, बराबरी 18. अश्लील, बेहुदा, अभद्र, घटिया 19. युक्ति, उपाय, ढंग 20. रिक्त, अपूर्ण।

ऊपर से नीचे

1. दोस्ती, मित्रता 2. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 4. बचाव, हिफाजत 5. मीठापन, मधुर होने का भाव 7. समुद्र 8. आत्मनिर्भर, जो दूसरे पर आश्रित न हो 9. रसवाला, रसदार 11. मां का बच्चों के प्रति प्रेम 13. खैरात, देने की क्रिया 15. दृष्टि, निगाह 16. वरिष्ठ, बुजुर्ग, चतुर 17. पराजय, हार।

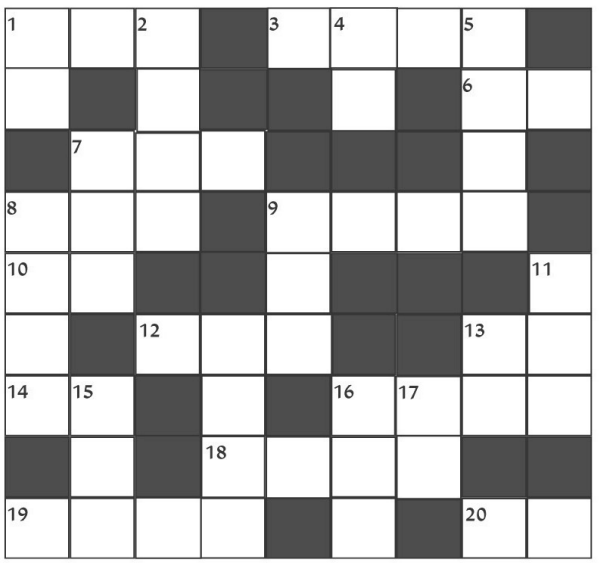

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 46 का हल

ला	लू	प्र	सा	द	या	द	व	
प		ति			र	क्ष	क	
र	ह	मा	न					आ
वा			मि	थु	न		दा	स
ह	वा	ला	त		सी	ता		पा
	न				ब	क	वा	स
औ	र	त		म		त		
ला		बे	च	ना		व	च	न
द	ह	ला		ना	ग	र		दी

हींग लगे न फिटकरी, चोरी का रंग चोखा

सहीराम

कल्पना कीजिए कि जमाने के साथ चलने की सीख अगर चोर मान लें तो वे क्या करेंगे? जाहिर है वे डाटा चुराएंगे या फिर टीआरपी चुराएंगे। पहले चोर, चोरी करने के लिए ढ़ाठा का इस्तेमाल करते थे अर्थात मुंह पर कपड़ा लपेट लेते थे, अब खुद डाटा ही चोरी होने लगा है। खैर, नये जमाने का हॉट माल यही है-डाटा, टीआरपी वगैरह। नये जमाने के चोरों की पसंदीदा चीजें यही हैं। पुराने जमाने के पहुंचे हुए चोरों की नजर या तो रुपये-पैसे पर होती थी या फिर सोने-चांदी के गहनों पर होती थी। तब चोरी भी सोने की होती थी और इनाम भी सोने का ही होता था। तब खुश होकर इनाम में सोने की गिन्नियां दी जाती थी। बाद में सोने-चांदी पर नजर तस्करों की पड़ी और वे किंवदंतियां बन गए।

इधर जो किंवदंती बने हुए हैं, वे सोने-चांदी के गहनों की एड करते हैं। खैर, कोई चोर ज्यादा ही टुच्चा निकला तो वह कपड़े-लत्ते भी चुरा लेता था। यूं तो पुराने जमाने में पशु चोर भी बहुत होते थे। लेकिन साहित्य में कुछ बहुत ही भावुक कहानियां रोटी चोरों की भी मिलती हैं। ये वो कहानियां थी जो लोगों का दिल बदल देती थी, उनकी सोच बदल देती थी, कई बार उनका जीवन भी बदल देती थी। लेकिन यह जमाना दिल और सोच बदलने का नहीं है और जीवन बदलने का तो बिल्कुल भी नहीं है। फिर समाज बदलने की बात तो बहुत दूर की है। अब डाटा या टीआरपी का यह जो नया हॉट माल है, इसकी चोरी पर किसी को कोई एतराज भी नहीं है। सोच वही है जो सरकारी माल की चोरी को लेकर रहती है। पहले राशन का माल चुराया जाता था, सीमेंट और लोहा चुराया जाता था, अस्पताल से दवाइयां चुराई जाती थीं, तो सोच यही होती थी कि मेरे बाप का क्या जाता है। इसी सोच के चक्कर में बाद में बड़े-बड़े घोटाले होने लगे। रुपये-पैसे या सोने-चांदी की चोरी तो माल के मालिक को ही हिलाती थी, पर सरकारी माल की चोरी सरकारों को हिलाने लगी। सरकारें अस्थिर होने लगीं और चोर स्थायी हो गए। उसी तरह डाटा या टीआरपी की चोरी पर भी किसी को कोई एतराज नहीं। सोच वही है कि मेरे बाप का क्या जाता है। हालांकि डाटा की चोरी का माल इतने इफरात में इकठ्ठा हो गया है कि महंगाई के इस जमाने उसे सबसे सस्ता कहा जा सकता है। हजार, दो हजार में लाखों का डाटा मिल जाता है। कई बार तो सौ-दो सौ में भी मिल जाता है। एक चाय की कीमत में हजारों लोगों का डाटा आपको मिल सकता है। टीआरपी की चोरी में चोर आपको पांच सौ-सात सौ ऊपर से और दे देता है और फिर उससे करोड़ों के विज्ञापन कमाता है। कमाल का वक्त है साहब, लोगों को लगता है कि इसमें क्या है, न हींग लग रही है, न फिटकरी, पर चोरों का रंग चोखा जम रहा है।

हरफनमौला अंदाज में दिखावे के सुख-दुख

संतोष उत्सुक

देखोजी, स्मार्ट प्रेजेंटेशन बहुत ज़रूरी है। शेव कर लो, फिर कपड़े धोएंगे, फैलाएंगे, सुखाएंगे, उतारेंगे, तह करेंगे और टप्पू वीडियो पोस्ट करेगा। ऐसा वीडियो अभी तक नहीं डाला गया। यह वीडियो दिखाएगा लॉकडाउन में हम दोनों कितने प्यार से मिलजुलकर घर का काम कर रहे हैं। जो कपड़े आपको अच्छे लगें, प्रेस कर पहन लेना-पत्नी बोली। बिना शेव किए करते हैं, शेविंग क्रीम, पानी, ब्लेड और टाइम की बचत दिखेगी। पत्नी बोली-देखोजी स्मार्ट प्रेजेंटेशन बहुत ज़रूरी है, चैनल वालियां ख़बरें तो देती हैं बाढ़, रेप, झगड़ा, मारने-पीटने की और डिज़ाइनर ड्रेस देखो क्या शान बढ़ाऊ, मानो ब्यूटी पार्लर में बैठी हों। मैंने कहा-वे प्रोफेशनल हैं। उन्होंने दूसरों को इम्प्रेस करना होता है। पत्नी बोली-मुझे पता है, ये लोग महामारी, सुशांत, ड्रग और रेप को भुलाकर बाढ़ पर तैरते रहते हैं और दूसरी तरफ यह बताते हैं कि चुनाव में वोटिंग के बाद उनका आकलन कितना सटीक होता है। उनकी छोड़ो, हम जो वीडियो बनाएंगे, वो निर्मल आनंद के लिए बनाएंगे जो सबको इम्प्रेस करेगा। हमने यह नहीं दिखाना कि शेव न करके कितने पैसे बचा लिए, हम दिखाएंगे परेशानी में भी शेव करनी चाहिए। टप्पू ने वीडियो में मुझे, पत्नी के कपडे प्रेस करते हुए कैप्चर कर लिया और मम्मी का स्टेटस अपडेट कर दिया। लाइक्स करने वाले पहले से लाइन में थे। खूब कमेंट्स बरसे, पत्नी खुश। सीधा कर दिया न, अरे वाह इस्त्री किए हुए कपड़े पहनाकर स्त्री कपड़े धुलवा रही है, रिटायरमेंट के बाद लांडरी खोल लेना, महिला सशस्त्रीकरण, कोविड जोड़ी, कोरोना यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स, जोरू का गुलाम और भी कई कमेंट्स जो मैंने फ़िल्टर कर दिए। मुझे लगा अगर बढ़िया प्रेजेंटेशन के चक्कर में न पड़ता तो बचा रहता लेकिन अगले ही क्षण लगा कि अच्छा किया जो शेव कर ली, कपड़ेप्रेस कर पहन लिए। बिना शेव और बिना प्रेस किए पहन लिए होते तो कमेंट्स होते, असली वो लग रहे हैं, बिजली का बिल नहीं दिया क्या, मजनू लग रहे हो, बड़े पैसे बचा रहे हो, कोरोना का कैदी, लगता है पत्नी, पति हो गई है। मेरी साली ने कमेन्ट लिखा-जीजाजी ने कपड़े बहुत अच्छे प्रेस किए, जंच रहे थे। मेरे काफी परिचित पत्नी की फ्रेंड लिस्ट में नहीं, हम पति-पत्नी फेसबुक पर भी फ्रेंड्स नहीं हैं वरना बढ़िया प्रेजेंटेशन का असर बहुत ज्यादा बढ़ सकता था। लेकिन मेरे चाहने वाले अभी भी जिंदा हैं और दिनभर फेसबुक पढ़ते रहते हैं।

रेड स्टाइलिश ड्रेस में सुहाना खान ने अपनी हॉटनेस, स्टनिंग लुक से बिखेरा जलवा

बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरूख खान की लाडली बेटी सुहाना खान की हाल ही में 'द आर्चीज' रिलीज हुई है। अपनी पहली डेब्यू फिल्म को लेकर सुहाना ने काफी सुर्खियां बटोरी। अपने सोशल मीडिया पर भी सुहाना खान काफी एक्टिव रहती हैं, जहां वो अक्सर अपने प्रोफेशनल से पर्सनल लाइफ तक के अपडेट फैंस के साथ शेयर करती रहती हैं।

सुहाना के फैंस को उनका फैशन सेंस भी काफी पसंद आता है, जो सोशल मीडिया पर जमकर वयारल भी हो जाता है। अब इसी बीच सुहाना खान ने एक लेटेस्ट पोस्ट किया है, जिसमें उन्होंने अपनी कुछ फोटोज शेयर की है, जो वायरल हो रहीं हैं। आपको बता दें कि सुपरस्टार शाहरूख खान की लाडली बेटी सुहाना खान ने अपने सोशल मीडिया इंस्टाग्राम पर अपनी कुछ फोटोज शेयर की हैं। इन फोटोज में सुहाना रेड कलर के स्टाइलिश गाउन में नजर आ रहीं हैं। इस दौरान सुहाना का लुक बेहद हॉट और गॉर्जियस लग रहा है। असल जिंदगी में उनकी हॉटनेस का अंदाजा आप एक्ट्रेस की इन लेटेस्ट फोटो के जरिए आसानी से लगा सकते हैं। इन फोटोज को शेयर करने के साथ सुहाना खान ने कैप्शन भी दिया है, जिसमें उन्होंने हार्ट इमोजी ड्रोप किया है।

सोशल मीडिया पर सुहाना की ये फोटो जमकर वायरल हो रहीं हैं। इन फोटोज से सुहाना अपने स्टनिंग लुक को लेकर लाइमलाइट में आ गईं हैं।

सुहाना खान की इन लेटेस्ट तस्वीरें सोशल मीडिया पर सामने आने के बाद से उनके फैंस लाइक करने के साथ कमेंट कर अपने रिएक्शन दे रहें हैं। इन फोटोज पर सेलेब्स ने भी कमेंट किए हैं। इस दौरान एक यूजर ने फोटो पर कमेंट कर लिखा, 'आपका लुक काफी स्टनिंग लग रहा है।' दूसरे यूजर ने लिखा, 'रेड में आप कमाल दिख रही हैं।' जबकि सुहाना की बेस्टी शनाया कपूर ने लिखा, 'टू हॉट टू हैंडल।' वहीं, अमिताभ बच्चन की बेटी श्वेता ने लिखा, 'बहुत खूबसूरत लडकी' और इसके साथ हार्ट इमोजी भी लागाया है।

संजना संघी ने धक धक के सीक्वल पर लगाई मुहर!

बॉलीवुड की जानी-मानी अभिनेत्री संजना संघी की फिल्म धक धक को 13 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था।इसमें फातिमा सना शेख, दीया मिर्जा और रत्ना पाठक शाह जैसी अभिनेत्रियां भी अहम भूमिकाओं में नजर आई थीं।बेशक यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी, लेकिन इसकी कहानी को काफी पसंद किया गया था।यही वजह है कि अब संजना ने धक धक की दूसरी किस्त पर मुहर लगा दी है। संजना ने लिखा, विशेष समाचार = मेरी प्यारी मंजरी (संजना के किरदार का नाम) का दिल जिज्ञासु और आंखें आशा से भरी हैं। वह इस विश्वास के साथ अपनी मासूमियत का आनंद लेती है कि दुनिया भी वैसी ही है। वह मथुरा में अपनी दुनिया में संतुष्ट है, लेकिन दुनिया का अनुभव करने के लिए उत्सुक है।उन्होंने लिखा, आपके साथ साझा करते हुए खुशी हो रही है कि यह यात्रा समाप्त नहीं होती। हम आपके लिए सीक्वल ला रहे हैं।

द आर्चीज ने मुझे म्यूजिक और एक्टिंग में खुद की पहचान बनाने में मदद की : डॉट

एक्ट्रेस डॉट, जिनका असली नाम अदिति सहगल है, ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में जोया अख्तर की द आर्चीज से डेब्यू किया। उनका कहना है कि इससे उन्हें म्यूजिक और एक्टिंग दोनों के जरिए खुद को अभिव्यक्त करने का मौका मिला।

डॉट ने म्यूजिकल फिल्म में एथेल की भूमिका निभाई।

एक्ट्रेस ने खुशी कपूर पर फिल्माए गए सभी चार डियर डायरी थीम्स को लिखा और गाया है, साथ ही बेट्टी (खुशी) के करेक्टर को अपनी आवाज दी है, एसिमेट्रिकल गाना गाया और कंपोज किया है।

उन्होंने अन्य दो चार्टबस्टर्स ढिशूम ढिशूम और सुनोह भी गाए हैं।

डॉट ने कहा, मैं द आर्चीज म्यूजिक को लिस्नर्स से मिल रहे जबरदस्त प्यार से रोमांचित हूं। म्यूजिक मेरी पहचान का एक बड़ा हिस्सा है। फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखने से बहुत पहले मैं एक सॉन्गराइटर थी। द आर्चीज ने मुझे म्यूजिक और एक्टिंग दोनों के जरिए खुद की पहचान बनाने में मदद की, इसलिए स्वाभाविक रूप से यह हमेशा मेरा सबसे पसंदीदा प्रोजेक्ट रहेगा।

एक्ट्रेस ने कहा, यह एल्बम मेरे लिए खास है। मुझे जोया, जावेद अख्तर, एसईएल और अंकुर तिवारी जैसे इंडस्ट्री के अग्रणी लोगों के साथ-साथ इंडी म्यूजिशियन तेजस और द आइलैंडर्स के साथ काम करने का मौका मिला।

डॉट इस बात से खुश हैं कि सुनोह 2023 के सबसे ज्यादा सुने जाने वाले गानों में शुमार है।

सुनोह हम सभी के लिए एक खास स्थान रखता है। यह पहला गाना था जिसे हमने तैयार किया और शूट किया। इतने सारे लोगों के साथ जुडना वास्तव में खुशी की बात है!

डॉट मानती हैं कि फिल्मों के लिए सॉन्ग लिखना एक बेहद अलग क्रिएटिव प्रोसेस है जिसका उन्होंने भरपूर आनंद लिया है। एक्ट्रेस ने कहा, स्क्रीन के लिए लिखना मेरे बेडरुम या कॉलेज प्रैक्टिस रूम में रचना करने से बहुत अलग अनुभव है! यह एक अत्यधिक सहयोगात्मक प्रक्रिया है जहां पहला फोकस नैरेटिव पर है।

जीने का एक मकसद होना चाहिए

दुनिया के विफल देशों का जब-जब जिक्र आता है, सोमालिया का नाम सबसे पहले जेहन में उभरता है। और इसके साथ ही एक सवाल भी नत्थी रहता है, आखिर वहां के लोग कैसे जीते होंगे? मगर वे जी भी रहे हैं और अपनी खातिर, सोमालिया की आने वाली नस्लों की खातिर जिंदगी से जंग भी लड़ रहे हैं। राजधानी मोगादिशु में ऐसे ही एक दिलेर दंपति के घर इल्वाद एल्मन का जन्म हुआ। आने वाले 22 दिसंबर को वह 31 साल की हो जाएंगी।

इल्वाद के उद्यमी पिता एल्मन अली अहमद 199० के दशक में एक प्रखर शांतिवादी थे। उनकी अपनी मोटर-वर्कशॉप थी, जहां लोग गाड़ियां दुरुस्त कराने आया करते। सोमालिया के हालात दिन-ब-दिन बिगड़ते जा रहे थे। राजधानी तक गृह-युद्ध की लपटों से महफूज न थी। चार बेटियों के पिता अहमद मानते थे कि हालात बदलने को कोई बाहर से नहीं आएगा, सोमाली लोगों को ही इसकी पहल करनी होगी। खासकर किशोरों-नौजवानों की मुलाकात एक पुरअमन सोमालिया के सपने से करानी होगी।

अहमद ने नई नस्लों को प्रेरित करना शुरू कर दिया। उनका एक नारा उन दिनों बेहद चर्चित हुआ था- 'बंदूक फेंको, कलम उठाओ।' बंदूक छोड़ने वाले लड़ाकों के पुनर्वास के लिए उन्होंने एक टेक्निकल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट भी शुरू किया। काफी युवा अहमद की बातों से प्रभावित होने लगे थे। यह सब बागी गुटों को नहीं सुहाया।

उन्हें धमकियां मिलने लगीं। शुरू-शुरू में तो अहमद ने उन पर ध्यान नहीं दिया। मगर एक ऐसा मोड़ भी आया, जब उन्हें अपने परिवार का जीवन खतरे में पड़ता दिखा। अहमद को बड़े भारी मन से यह कुबूल करना पड़ा कि परिवार को सोमालिया से निकालने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं। उन्होंने बीवी-बेटियों को तो कनाडा भेज दिया, पर खुद मोगादिशु में अपने मकसद में जुटे रहे। अहमद के परिवार को कनाडा में शरण मिल गई। मगर 9 मार्च, 1996 को घर के पास ही अहमद का कत्ल कर दिया गया।

इल्वाद एल्मन कनाडा के बेहद खुले, लोकतांत्रिक माहौल में बड़ी हुईं, वहीं पर उन्होंने इस दुनिया को जाना। उन तक सोमालिया से जुड़ी जो भी खबरें पहुंचतीं, वे सिर्फ खून-खराबे, अपहरण व बलात्कार से जुड़ी होतीं। उन खबरों को पढ़कर इल्वाद और उनकी बहनों को काफी तकलीफ पहुंचती और लगता कि सोमाली उन्हें बुला रहे हैं। उनकी परवरिश ऐसे माता-पिता ने की थी, जिनका मानना था कि जिंदगी का एक मकसद होना चाहिए।

आखिरकार अपनी मां के साथ इल्वाद वर्ष 2०1० में सोमालिया लौट आईं, हालांकि उस समय भी मोगादिशु के कई इलाकों में अल-कायदा से जुड़े आतंकी संगठन अल-शबाब का दबदबा कायम था। लगभग 2० साल की इल्वाद ने मां के साथ मिलकर देश में बलात्कार की शिकार लड़कियों और किशोर लड़ाकों के पुनर्वास के लिए 'एल्मन पीस सेंटर' नाम से एक सहायता केंद्र की स्थापना की। सोमालिया में इस तरह का यह पहला केंद्र था।

इल्वाद चाहतीं, तो कनाडा में एक बिंदास जिंदगी जी सकती थीं, मगर उन्हें पिता के सपने को पूरा करना है। अपनी सहयोगी संस्था 'सिस्टर सोमालिया' के तहत उन्होंने दहशतगर्दों के शारीरिक जुल्म की शिकार छोटी बच्चियों और औरतों को मानसिक यंत्रणा से निकालने के लिए योग एवं कला का सहारा लिया। वह उनके पुनर्वास की व्यवस्था में जुट गईं। साल 2०12 में सोमालिया ने अपना पहला टेक्नोलॉजी, इंटरटेनमेंट, डिजाइन कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया, जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर इल्वाद को बुलाया गया। इस मौके पर उन्होंने सोमालिया के नवनिर्माण में सिस्टर सोमालिया की कोशिशों को काफी प्रभावशाली तरीके से पेश किया।

बहादुर इल्वाद ने अपने मानवीय कामों से न सिर्फ राजधानी के आम और खास लोगों को प्रभावित किया, बल्कि सोमालिया के बाहर भी उनके अनुभव व नेतृत्व क्षमता को मान्यता मिली। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान के संगठन की नई पहल 'एक्सट्रीमली टुगेदर' के नौ युवा प्रतिनिधियों में से एक इल्वाद भी हैं, जो अन्नान के नेतृत्व में दुनिया भर में शांति की स्थापना के लिए काम कर रही हैं। शांति के प्रति इल्वाद की प्रतिबद्धता को देखते हुए 2०15 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने नागरिक-सुरक्षा पर बहस में भाग लेने के लिए उन्हें आमंत्रित किया था। यह पहली बार था कि सिविल सोसायटी के किसी व्यक्ति को इस मुद्दे पर बोलने के लिए वहां न्योता गया हो। साल 2०16 में तत्कालीन महासचिव बान की मून ने उन्हें युवा, शांति और सुरक्षा पर विशेष सलाहकार नियुक्त किया।कई वैश्विक सम्मानों से नवाजी जा चुकीं इल्वाद को बीबीसी ने हाल ही में वर्ष की 1०० प्रेरक महिलाओं में शामिल किया है।

एक विफल देश के नागरिकों को कितनी बड़ी-बड़ी कीमतें चुकानी पड़ती हैं, इल्वाद की जिंदगी उसका एक बड़ा उदाहरण है। पिछले साल राजधानी मोगादिशु में उनकी बहन को भी गोली मार दी गई। मगर इल्वाद के शांति-प्रयास थमे नहीं, उसमें और मजबूती आ गई है।

खडके की नई टीम का पैटर्न

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडके ने अपनी टीम बनाने में 14 महीने का समय लिया और बहुत सारे महासचिवों और प्रभारियों को उनके पद पर बनाए रखा। लेकिन इसके बावजूद उनकी टीम में एक पैटर्न दिख रहा है और संतुलन बनाने का प्रयास भी दिख रहा है। खास कर उत्तर भारत के राज्यों में खडके ने एक डिजाइन के तहत नियुक्तियां की हैं। इसका कितना फायदा मिलेगा यह नहीं कहा जा सकता है लेकिन यह लग रहा है कि कांग्रेस के महासचिवों का प्रभार या प्रभारियों की नियुक्ति रैंडम नहीं है। ऐसा नहीं है कि किसी को कहीं बैठा दिया गया। नए और पुराने लोगों का भी संतुलन बनाया गया है और परिवार के प्रति निष्ठावान लोगों का भी ध्यान रखा गया है।

खडके ने महासचिव अविनाश पांडे को उत्तर प्रदेश का प्रभारी बनाया है। लेकिन अभी तक वे ऐसे राज्यों में प्रभारी रहे हैं, जहां कांग्रेस का ठीक ठाक आधार रहा है, जैसे राजस्थान, झारखंड आदि। लेकिन अब ऐसे राज्य में भेजा गया है, जहां कांग्रेस बिल्कुल समाप्त हो गई है। लेकिन इस नियुक्ति में पैटर्न यह है कि कांग्रेस ऐसी नियुक्ति कर रही है, जिससे दोनों संभावित सहयोगियों- सपा और बसपा से टकराव न हो। पहले कांग्रेस ने दलित समाज के बृजलाल खाबरी को हटा कर सामान्य वर्ग के अजय राय को अध्यक्ष बनाया और अब ब्राह्मण प्रभारी भेजा है। कांग्रेस यह मैसेज दे रही है कि वह भाजपा के वोट में सेंध लगाने की राजनीति कर रही है। इसी वजह से मुस्लिम, पिछड़ा या दलित प्रभारी नहीं बनाया।

बिहार में समाजवादी पृष्ठभूमि वाले मोहन प्रकाश को प्रभारी बनाया है। लालू प्रसाद और नीतीश कुमार के साथ उनके पुराने और अच्छे संबंध रहे हैं। कांग्रेस के मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह के साथ भी पुराना संबंध है। सो, दोनों बेहतर तालमेल के साथ काम कर सकेंगे। नाम से उनकी जाति का अंदाजा नहीं होता है लेकिन लालू, नीतीश को पता है। इसी तरह का राजनीतिक पैटर्न झारखंड और पश्चिम बंगाल की नियुक्ति में दिख रहा है। जम्मू कश्मीर के मुस्लिम नेता जीए मीर को कांग्रेस ने इन दोनों राज्यों का प्रभारी बनाया है। इसके जरिए कांग्रेस ने हेमंत सोरेन और ममता बनर्जी दोनों को मैसेज दिया है। इन दोनों राज्यों में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष सामान्य वर्ग के हैं।

इसी तरह छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने सचिन पायलट को प्रभारी बनाया है। वहां आदिवासी समाज के दीपक बैज को अध्यक्ष रखा गया है। आदिवासी और पिछड़ा का कार्ड कांग्रेस खेल रही है। लेकिन उससे ज्यादा अहम यह है कि पायलट कांग्रेस के नए नेताओं में सबसे जुझारू और मेहनती हैं। कांग्रेस को छत्तीसगढ़ में लोकसभा चुनाव में बेहतर करने की उम्मीद है। जितेंद्र सिंह, सुखजिंदर रंधावा, रणदीप सुरजेवाला आदि को उनके संबंधित राज्य में बनाए रखा गया है क्योंकि प्रदेश नेतृत्व के साथ इनका तालमेल बेहतर है। राजनीति के हाशिए में चली गईं, दीपा दासमुंशी को कांग्रेस की सत्ता वाले राज्य तेलंगाना में भेजा गया है।

सू- दोकू क्र.047

	8				1		5	
6			8			2		3
	3				2		1	
		3		9		5		4
5			3				9	
		4		2				6
4			2		3		6	
		6				8		7
	2	9	7		6			

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 46 का हल

5	3	9	7	4	8	6	2	1
2	1	6	5	9	3	4	7	6
4	7	8	1	6	2	3	5	9
3	6	1	8	5	9	2	4	7
8	5	2	3	7	4	1	9	6
7	9	4	2	1	6	8	3	5
6	4	7	9	2	1	5	6	3
1	8	5	4	3	7	9	6	2
9	2	3	6	8	5	7	1	4

डालिए समय पूर्व पहुंचने व कार्य करने की आदत...!

वीरेन्द्र देवांगन

'विभा' को आफिस पहुंचना रहता था, साढ़े दस बजे। पर वह घर से ही निकलती थी, साढ़े दस के आसपास। रास्ते की कष्ट-कठिनाई को पार कर वह बमुष्किल आफिस पहुंचती थी, साढ़े ग्यारह के करीब।

उसके इस आदत से पुराने अधिकारीतंग थे-ही-थे; नये अधिकारी भी आजीज आ चुके थे। पुराने अधिकारी उसे जाने कितनी बार पहले मौखिक, फिर लिखित चेतावनी दे चुके थे। किंतु,छोटे बच्चोंवाली विधवा महिला होने का दर्द बयां कर वह हरदमठोस कार्रवाई से बच जाया करती थी।

नये अधिकारी भी उसे चेतावनी-पर-चेतावनी दे रहे थे, पर वह सुधरने का नाम नहीं ले रही थी। वह कभी धरेलू काम, कभी बीमारी, कभी टेऊफिक जाम, कभी बच्चों के स्कूल, कभी स्कूटी बिगड़ने, तो कभी मेहमान का बहाना बनाकर आफीस लेट पहुंचती रहती थी। डांट-डपट करने पर छुट्टी का एप्लीकेषन भेजकर 'जो करना है, करो; मैं वही करूंगी, जो मुझे करना है'' की तर्ज पर घर बैठ जाया करती थी।

इसका प्रभाव दूसरे कर्मचारियों पर भी पड़ने लगा था। वे भी विभा का उदाहरण देकर ऐसी ही गुस्ताखियां करने लगे थे। इससे आफिस का अनुषासन भंग हो गया था। इसकी भनक बड़े साहब को लगी। वे एक दिन ग्यारह बजे औचक निरीक्षण के लिए पहुंच गए। पहुंचते ही सबसे पहले हाजिरी रजिस्टर को अपने कब्जे में लिया। वे एक-एककर सबकी हाजिरी लिये। जो उपस्थित मिला, उसके ऊपर टीक का निषान किए। जो अनुपस्थित मिला, उसका पुराना रिकार्ड समेत पंचनामा बनाकर ले गए। शाम को विभा के निलंबन व विभागीय जांच का आदेष मिला, तो कार्यालय में हड़कंप मच गया। विभागीय जांच हालांकि लंबा चला, लेकिन विभा की अनुषासनहीनता सिद्ध पाई गई। इस तरह उसकी बर्खास्तगी हो गई। वहअब, अपने किये पर पछता रही है। परंतु, अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत?

राकेश को इंटरव्यू में 11 बजे पहुंचना था, पर वह पहुंचा सवा ग्यारह बजे। तब तक हाजिरी हो चुकी थी। उसको अनुपस्थित मानकर उसके स्थान पर नीचेवाले का नाम लिख दिया गया। वह गिड़गिड़ाया। हाथ जोड़ा। मिन्नतें किया। पर किसी को उससे सहानुभूति नहीं हुई। कंपनी की दलील थी कि जो शख्स इंटरव्यू जैसे महत्वपूर्ण इवेंट में समयपूर्व नहीं पहुँच सकता, वह उपयोगी कैसे हो सकता है? फलतः हाथ आती नौकरी उसके हाथ सेइसलिए फिसल गई, क्योंकि उसके दोस्तों ने उसका रात खराब कर दिया था। देररात सोने से उसको नींद नहीं आई थी। वह देर तक अलसाया उठा था। अनमने से तैयार होकर इंटरव्यू में गया था।

कितने ही काम ऐसे हैं, जिन्हें हम लेटलतीफी से करते हैं। चाहे बिजली या नल बिल या बच्चों की फीस पटाना हो, हम समय पर नहीं पटाते। बाद में जुर्माना भरकर पछताते हैं। कहीं जाना हो, तो ऐनवक्त रिजर्वेषन करवाने के लिए भागदौड़ करते हैं। जबकि यह काम पूर्वनियोजन की तरह पहले भी किया जा सकता था।

इसी तरह देर से सोकर उठना, समयपूर्व तैयार नहीं होना, देर से घर से निकलना, समयपूर्व कार्यस्थल या फंक्शन पर नहीं पहुंचना, कार्य को लटकाए रखना अर्थात समय पर या समयपूर्व जरूरी कार्य नहीं करना, समय पर नहीं खाना, समय पर नहीं सोना-ये कुछ ऐसी आदतें हैं, जो इंसान को पीछे धकेलती हैं। उसकी प्रगति में बाधक बनती हैं। फर्ज करो कि आप किसी फंक्शन के मुख्य अतिथि हैं। फंक्शन में आपका इंतजार हो रहा है।आप वहां समय पर नहीं पहुंचे हैं। ऐसी आदत से आप अपना ही नहीं, उन सारे लोगों का वक्त बरबाद कर रहे हैं, जो वहां समय पर पहुंचे हैं। यहां यह भी सोचने की जरूरत है कि काम सभी करते हैं। सभी का वक्त कीमती होता है, लेकिन दूसरे के कीमती समय की चिंता क्यों नहीं रहती हमें? देखा आपने कार्यस्थल और इंटरव्यू के लिए समय पर नहीं पहुंचने का दुष्परिणाम। इसी तरह यदि आप किसान हैं, तो समय पर ही बीज बोएंगे, निंदाई, गुड़ाई व कटाई करेंगे। यदि आप व्यापारी हैं, तो वक्त का ख्याल रखकर दुकान खोलेंगे, तभी तो ग्राहक आपके पास आएंगे। यात्रा में समय पर रेल, प्लेन व बस पकड़ेंगे, तभी तो आप गंतव्य तक समय पर पहुचेंगे। इसलिए आप ऐसी गलती न करें।

अग्रवाल ने कार्यकर्ताओं के साथ सुना पीएम मोदी के मन की बात का 108 वां एपिसोड

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। कैबिनेट मंत्री डॉ प्रेमचंद अग्रवाल ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम के 108वें एपिसोड को कार्यकर्ताओं के साथ देखा व सुना। कैबिनेट मंत्री डॉ अग्रवाल ने धर्मपुर नगर मंडल के बूथ संख्या 137 में मन की बात कार्यक्रम को सुना। डॉ अग्रवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने मन की बात में गुजरात की डायरा परंपरा का जिक्र किया। जिसमें एक हास्य कलाकार अपनी बातों से हर किसी को हंसने पर मजबूर करता है लेकिन वह भीतर से कितना संवेदनशील होता है। डॉ अग्रवाल ने कहा कि पीएम मोदी ने सावित्रीबाई फुले के महाराष्ट्र में अकाल पड़ने पर किए गए योगदान को याद किया। उन्होंने कुडुक भाषा में शिक्षा दे रहे स्कूलों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि पीएम ने मां की बात के जरिए इनोवेशन का हब बन रहे भारत का भी जिक्र किया और इसे पूरे देशवासियों की सामूहिक उपलब्धि बताया।

डॉ अग्रवाल ने कहा कि पीएम ने वर्ष 2023 को उपलब्धियों भरा वर्ष बताया। जिसमें देश पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना। जी-20 जैसे सफल आयोजन हुए और चंद्रयान-3 की सफलता भी इसी वर्ष हासिल हुई। यही नहीं नाटू-नाटू गाने ने ऑस्कर जीतकर पूरे देश को गौरवान्वित किया। वहीं क्रिकेट वर्ल्ड कप में खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर देश का मान बढ़ाया। डॉ अग्रवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम का पूरे देशवासियों को इंतजार रहता है उनके इस कार्यक्रम के जरिए देश की प्रतिभावान बच्चों को हौसला मिलता है। उनके इस कार्यक्रम से युवाओं महिलाओं और जिंदगी में नए अवसर तलाश रहे लोगों को प्रेरणा मिलती है।

इस मौके पर मंडल अध्यक्ष धर्मपुर नगर अजय शर्मा, वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता गोपालपुरी, निवर्तमान पार्षद राजपाल, आलोक कुमार, युवा मोर्चा अध्यक्ष विकास ठाकुर, युवा मोर्चा महानगर अध्यक्ष देवेंद्र बिष्ट आदि सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जोशी ने विजय कॉलोनी में सुनी मोदी के मन की बात

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने विजय कॉलोनी में मसूरी विधानसभा क्षेत्र के बूथ संख्या 84 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम का 108वां संस्करण को पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ सुना।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में गुजरात में डायरा की परंपरा, झारखंड के एक आदिवासी गांव के कुडुख भाषा, मिलेट्स, फिटनेस व राम मंदिर का भी जिक्र किया। मन की बात में उन्होंने युवाओं को फिट रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात का ये 108 वां संस्करण था। हमारे सनातन संस्कृति में 108 अंक का विशेष महत्व है। उन्होंने प्रधानमंत्री को 108 वें संस्करण की बधाई भी दी। मंत्री जोशी ने कहा अयोध्या में राम मंदिर को लेकर पूरे देश में उत्साह है। लोग अपनी भावनाओं को अलग-अलग तरह से व्यक्त कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में फिटनेस का जिक्र किया है। शारीरिक रूप से फिट रहना बेहद आवश्यक है। उन्होंने सभी से नए वर्ष में सभी को स्वस्थ तथा फिट रहने के संकल्प का आह्वान किया।

गुरुद्वारा श्री गुरु सभा के पदाधिकारियों ने भसीन के राज्यमंत्री बनने पर दी बधाई

हमारे संवाददाता

देहरादून। गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा, आढ़त बजार के प्रतिनिधि मण्डल ने देवेंदर भसीन भाजपा नेता के हायर ऐजुकेशन राज्य मन्त्री बनने पर उनके निवास पर जाकर उन्हें शाल ओड़ा कर, पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित कर बधाई एवं शुभकामनायें दी।

गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा के महासचिव स. गुलजार सिंह ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी एवं भाजपा संगठन का का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पंजाबी समाज से देवेंदर भसीन को राज्यमंत्री का दर्जा देकर सभी वगों को साथ लेकर चलने का कार्य किया जा रहा है। पूर्व पार्षद स. देवेंदर पाल सिंह मोंटी ने सरकार का आभार जताते हुए कहा कि पंजाबी समाज हमेशा देश हित के लिए हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहता है। सिख एवं पंजाबी समाज हमेशा आपको सहयोग करता रहेगा। कहा कि भसीन सामाजिक एवं ऐजुकेशन पर सराहनीय कार्य कर रहें हैँ। प्रधान स. गुरबक्श सिंह राजन ने उन्हे 17 जनवरी को श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के प्रकाश पर्व पर आने के लिए आमंत्रित किया एवं पूर्ण सहयोग के लिए विश्वास दिलाया।

राज्यमंत्री देवेंदर भसीन ने निमंत्रण को स्वीकार करते हुए कहा कि मैं गुरु महाराज का आशीर्वाद लेने अवश्य आऊंगा, सिख कौम की अलग पहचान है आपकी आकांशाओ पर पूरा उतरने की कोशिश करूँगा, आप सब शुभकामनायें देने आये आप सभी का दिल की गहराइयों से धन्यवाद है। सेवा सिंह मठारु ने डॉ. देवेंदर भसीन के राज्य उच्च शिक्षा उन्नयन समिति के उपाध्यक्ष बनने पर शुभकामनायें देते हुए दीर्घायु की कामना की। इस अवसर पर प्रधान स. गुरबक्श सिंह राजन, महासचिव स. गुलजार सिंह, उपाध्यक्ष चरणजीत सिंह, स. देवेंदर सिंह भसीन, देविंदर पाल सिंह मोंटी, स. गुरप्रीत सिंह जोली एवं स. सेवा सिंह मठारु आदि उपस्थित थे।

उत्तराखंड विद्वत् सभा का समायोजित वार्षिक सम्मान समारोह 1 जनवरी को

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड विदवत् सभा दवारा 1 जनवरी 2024 को सनातन धर्म सभा, गीता भवन, राजा रोड, देहरादून में गीता श्लोक वाचन प्रतियोगिता एवं सम्मान समारोह आयोजित होगा जिसमें मुख्य अतिथि सन्त गोपाल मणि महाराज, ज्योतिषपीठ व्यास पदालंकृत आचार्य शिव प्रसाद ममगाई, यज्ञ रत्न पदालंकृत आचार्य नित्यानन्द सेमवाल, परशुराम चतुर्वेद विद्यालय, देहरादून के संस्थापक आचार्य पवन शर्मा, केदार-बद्री मन्दिर समिति के वेदपाठी आचार्य रविन्द्र भटट्, समाज सेवी कमलेश उनियाल तथा प्रवीण त्यागी को सम्मानित किया जाएगा।

अध्यक्ष विजेन्द्र ममगांई ने बताया कि सम्मानित संरक्षक मण्डल 108 स्वामी कृष्ण गिरी महाराज, डॉ राम लखन गैरोला, डॉ० ओम प्रकाश भट्ट, तुलसी राम पैन्यूली, डा० धर्मानन्द मैठाणी, श्री अनुसूया प्रसाद देवली, देवी प्रसाद ममगाई, शोभाराम गैरोला, डॉ० राम कृपाल त्रिपाठी, श्री उदय शंकर भट्ट, सुभाष जोशी, डा. संदीप रतड़ी, शशी बल्लभ पंत,जयदेव सुन्दरियाल, चन्द्र प्रकाश ममगाई, जयप्रकाश गोदियाल, वाचस्पती डिमरी इत्यादि की प्रेरणा से यह सम्मान समारोह तथा गीता प्रतियोगिता हो रही हैं ।

सांस्कृतिक एवं संघठन सचिव सुभाष चमोली ने बताया कि पंजीकृत प्रतिभागियों गीता श्लोक वाचन प्रतियोगिता में भाग ग्रहण करेंगे। सभा प्रतियोगिता के माध्यम से समाज को समस्त शास्त्र मयी गीता के प्रति अभीमुखीकृत करना चाहती हैं जिससे गीता सिद्धातों पर अध्ययन, चिंतन, मनन हो सके।

कोषाध्यक्ष अजय डबराल ने बताया कि सभी सम्मानित संरक्षक मण्डल, पूर्व पदाधिकारियों, विशिष्ट सदस्यों, आजीवन सदस्यों व्यापारियों समाजिक धर्म प्रेमी सज्जनों में सभा में कोष में अपनी सहयोग राशि प्रदान सभा के कार्यो को उद्देश्यों को बहुत बल प्रदान किया हैं द्य जिसके सभा सदैव हमारी आभारी रहेगी।

प्रवक्ता मुकेश पन्त ने बताया कि समायोजित इस प्रबंधन गोष्ठी में समग्र पूर्व सज्जा पर विचार विमर्श किया गया। मौके पर वार्षिक पत्रिका के संपादक उपाध्यक्ष सत्यप्रकाश सेमवाल, प्रवक्ता मुकेश पंत, लेखानिरीक्षक उमाकांत भट्ट, सलाहकार राजेश अमोली ने अपने विचार व्यक्त किए। समायोजित प्रबंधन गोष्ठी में समग्र पूर्व धीरज मैठाणी, रविन्द्र गंवाल, मुकेश कौशिक, आदित्य राम थपलियाल,परशुराम उनियाल, राजेश्वर सेमवाल, भुवनेश थपलियाल, दीपक अमोली उपस्थित रहें।

सृष्टि अरोड़ा के रिसेप्शन पार्टी में पहुचे राजनीति के दिग्गज

संवाददाता

देहरादून। हरियाणा के तीन बार के पूर्व मुख्यमंत्री भजन लाल के पोते-पोतियों और पूर्व सांसद कुलदीप बिश्नोई के क्रिकेटर बेटे चैतन्य बिश्नोई और विधायक बेटे भव्य बिश्नोई के सम्मान में नई दिल्ली के हयात में एक भव्य शादी का रिसेप्शन आयोजित किया गया था। उत्तराखंड की राजनीतिज्ञ और कार्यकर्ता शिल्पी अरोड़ा नई दिल्ली में कांग्रेस की राष्ट्रीय मीडिया पैनलिस्ट, विज्ञापन महिला, सहकारी नेता और उत्तराखंड की महिला कार्यकर्ता सुश्री शिल्पी अरोड़ा ने क्रिकेटर चैतन्य बिश्नोई और उनके भाई हरियाणा के विधायक भव्य बिश्नोई के साथ आईएएस परी बिश्नोई के साथ अपनी नवविवाहित बेटी सृष्टि अरोड़ा के लिए रिसेप्शन की मेजबानी की। दोनों पूर्व सांसद और राजस्थान में भाजपा के

सह-प्रभारी कुलदीप बिश्नोई और रेणुका बिश्नोई के बेटे हैं।

शिल्पी अरोड़ा की बेटी सृष्टि अरोड़ा ने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से पीएचडी की है, जबकि चैतन्य आईपीएल चेन्नई सुपर-किंग का हिस्सा रहे हैं और अब सैन फ्रांसिस्को यूनिकॉर्न टीम के लिए यूएसए की प्रमुख लीग क्रिकेट में खेल रहे हैं। उनके भाई भव्य बिश्नोई आदमपुर विधानसभा से सबसे कम उम्र के भाजपा विधायक हैं और परी बिश्नोई 2019 बैच की आईएएस अधिकारी हैं।

ओवल मेंशन द हयात में आयोजित भव्य स्वागत समारोह में पूर्व स्पीकर मीरा कुमार, गुड़गांव के सांसद राव इंद्रजीत सिंह, हरियाणा के पूर्व सीएम भूपिंदर सिंह हुडा, पूर्व म्यूनियन मंत्री रीता बहुगुणा, सांसद निशिकांत दुबे, भाजपा नेता मनजिंदर सिंह सिरसा और उत्तराखंड और हरियाणा के विधायक शामिल थे।

एक नजर

हत्या व लूट में फरार चल रहा 25 हजार का ईनामी बदमाश गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। हत्या व लूट मामले में फरार चल रहे 25 हजार के ईनामी बदमाश को एसटीएफ द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है। इस वारदात के अन्य आरोपी पूर्व में ही गिरफ्तार किये जा चुके है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एसटीएफ आयुष अग्रवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि बीती 11 सितम्बर को थाना कनखल में दीप्ती पुत्री डॉ. अशोक चढडा निवासी म.न. 11 पजाब सिन्ध क्षेत्र दादू चौक भौरो मन्दिर रोड नियर प्रेमनगर आश्रम पुल द्वारा तहरीर देकर बताया गया था कि अज्ञात बदमाशों द्वारा उनके पिता डॉ. अशोक चढडा की गला रेतकर हत्या कर दी गई है। मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी। जांच में सामने आया कि घटना में 6 बदमाश शामिल थे जिन्होने लूट के इरादे से हत्या की इस वारदात को अंजाम दिया था। जिनमें से चार बदमाशों को पुलिस ने 15 सितम्बर को गिरफ्तार कर लिया था। जिनके नाम भानु प्रताप पुत्र कटार सिंह निवासी ग्राम बस्तोरा थाना हस्तिनापुर जिला मेरठ हाल निवासी किरायेदार मायाविहार जगजीतपुर थाना कनखल, संदीप कुमार पुत्र जवाहर सिंह निवासी पण्डितपुरी रायसी थाना लक्सर जिला हरिद्वार, अभिजीत उर्फ सुक पुत्र मनमोहन सिंह निवासी आर्यनगर ज्वालापुर हरिद्वार व मनीष गिरी पुत्र जनेश्वर निवासी बैराज कालोनी मायापुर थाना कोतवाली हरिद्वार है। पकड़े गये बदमाशों ने पूछताछ में बताया कि उनके साथ इस घटना में शिव्वू लगडा पुत्र मोहर सिह निवासी लालमन्दिर आर्यनगर कोतवाली ज्वालापुर व दीपक कोती पुत्र इदम सिह निवासी रावली महदूद थाना सिडकुल जनपद हरिद्वार भी शामिल थे। जो घटना के दिन से ही लगातार फरार चल रहे थे। जिनमे से शिब्बू लंगड़े की गिरफ्तारी पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हरिद्वार द्वारा 25 हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया था।

जिनमें से एसटीएफ द्वारा कड़ी मशक्कत के बाद कल देर रात 25 हजार के ईनामी बदमाश शिब्बु लगंडे को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया है। जिसे अग्रिम कार्यवाही हेतु थाना कनखल हरिद्वार में दाखिल किया गया है।

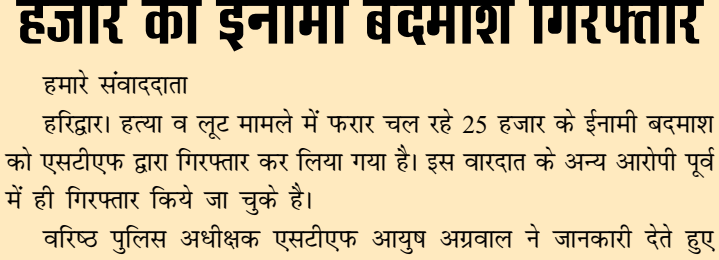

15 लाख की स्मैक व तस्करी में प्रयुक्त कार सहित दो गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

देहरादून। नशा तस्करी में लिप्त दो लोगों को पुलिस ने लगभग साढे 15 लाख रूपये की स्मैक सहित गिरफ्तार कर लिया है। जिनके कब्जे से तस्करी में प्रयुक्त कार भी बरामद की गयी है।

जानकारी के अनुसार बीती शाम थाना कैन्ट पुलिस को सूचना मिली कि दून में कुछ नशा तस्कर भारी मात्रा मे नशीले पदार्थो सहित आने वाले है। सूचना पर कार्यवाही करते हुए कैन्ट थाना पुलिस द्वारा थाना डोईवाला पुलिस के सहयोग से बताये गये स्थान टोल प्लाजा लच्छीवाला, डोईवाला के पास चौकिंग अभियान चला दिया गया। इस दौरान पुलिस को एक संदिग्ध इरिटिगा कार आती हुई दिखायी दी। पुलिस टीम द्वारा जब उसे रोक कर चौक किया गया तो कार सवार दो लोगों से 153.02 ग्राम स्मैक बरामद हुई। पूछताछ में उन्होने अपना नाम आशु पुत्र स्व. रतनलाल निवासी 682 डाकरा गढी कैन्ट व विशाल चौहान पुत्र स्व. चन्द्रभान निवासी 249/2 कांवली रोड गांधीग्राम कोतवाली नगर देहरादून बताया। पुलिस ने उनके खिलाफ थाना डोईवाला में मुकदमा दर्ज कर उन्हे न्यायालय में पेश कर दिया है।

नाबालिग से दुष्कर्म के विरोध में कांग्रेस ने फूंका सरकार का पुतला

हमारे संवाददाता

देहरादून। चंपावत के भाजपा नेता द्वारा नाबालिग के यौन शोषण के विरोध में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा आज महानगर अध्यक्ष डॉ जसविन्दर सिंह गोगी के नेतृत्व में एश्ले हॉल चौक पर भाजपा सरकार का पुतला दहन किया गया।

इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष डा. जसविन्दर सिंह गोगी ने कहा कि चंपावत में भाजपा नेता कमल रावत जो क्षेत्र पंचायात सदस्य है, द्वारा नाबालिग का यौन शोषण किया गया है। जिसे पुलिस ने अभी तक गिरफ्तार भी नहीं किया है। मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र में भाजपा नेता का ये कुकृत्य बताता है कि भाजपा सत्ता के मद में चूर हो गई है। गोगी ने कहा कि हैरत की बात है कि भाजपा अब जनता की आंखों में भी यह कह कर धूल झोंक रही है कि आरोपी नेता ने 20 दिसम्बर को पद से इस्तीफा दे दिया था। क्या यह कुकृत्य करने के लिए आरोपी भाजपा नेता ने पार्टी की अनुमति ली जो उसने घटना से ठीक पहले इस्तीफा दे दिया था। भाजपा की कथनी करनी में इतना फर्क है कि वह एक तरफ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की बात करती हैं दूसरी तरफ भाजपा शासन में महिलाओं के विरुद्ध अपराध में भयंकर वृद्धि हुई है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार शांत आबोहवा की छवि

वाले उत्तराखंड में 2022 में महिलाओं के खिलाफ 26 प्रतिशत मामले बढ़े हैं। उत्तराखंड ऐसे अपराधों में देश मे सर्वाधिक वृद्धि वाले राज्यों में से है। यह धामी सरकार की घोर विफलता है। उत्तराखंड में इससे पूर्व भी भाजपा नेताओं पर कभी पेपर लीक, कभी यौन शोषण, कभी मारपीट के आरोप लगते रहे हैं। ऐसे ही भाजपा के कैबिनेट मंत्री ने भी सारी मर्यादाएं लांघते हुए ऋषिकेश में सरेराह एक नागरिक के साथ मारपीट की थी।

गोगी ने कहा कि हाल ही में कोटद्वार में भाजपा के विधायक दिलीप रावत ने भी समर्थक का चालान काटने पर परिवहन अधिकारी पर सरेराह हाथ उठाया गया था। उन्होने कहा कि युवा, बेरोजगार और राज्य आन्दोलनकारी उपेक्षित होकर सड़कों पर संघर्षरत हैं, वहीं भाजपा के नेता सत्ता के अहंकार में लोगों से खुलेआम दुर्व्यवहार कर रहे हैं। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दोषी भाजपा नेता को तत्काल गिरफ्तार कर कार्रवाई करने की मांग की है। पुतला दहन करने वालों में प्रदेश उपाध्यक्ष पूरन सिंह रावत, प्रदेश महामंत्री मनीष नागपाल, प्रदेश प्रवक्ता गरिमा दौसोनी, महिला महानगर अध्यक्ष उर्मिला थापा ,सत्य पोखरियाल ,सावित्री थापा ,सोनम थापा, पूनम कंडारी, देवेंद्र सिंह सहित अन्य कई लोग शामिल रहे।

कैबिनेट मंत्री ने पर जरुरतमंदों को बांटे कंबल

संवाददाता

देहरादून। कैबिनेट मंत्री डॉ प्रेमचंद अग्रवाल और विधायक विनोद चमोली ने कार्यकर्ताओं के साथ कारगी चौक पर 400 जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए।

मंत्री डॉ अग्रवाल ने कहा कि इन दोनों शीत ऋतु अपना प्रकोप दिख रही है। ऐसे में निराश्रित और खुले आसमान में रहने को मजबूर लोगों के लिए सामाजिक संस्थाओं को आगे आना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने निराश्रित और खुले में सोने को मजबूर लोगों के लिए प्रदेश के हर जनपद, हर नगर में रेन बसेराओ का इंतजाम किया है। कहा कि सरकार की ओर से प्रत्येक दिन उनके लिए अलाव की व्यवस्था भी की गई है।

इस मौके पर मंडल अध्यक्ष अजय शर्मा, गोपालपुरी, विमला ठाकुर, अशोक कुमार, हर्ष नेगी, सागर राणा, बबली रावत, आलोक कुमार, राजपाल आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मोबाइल लूट का खुलासा, दो गिरफ्तार

❑वारदात में प्रयुक्त चोरी की स्कूटी बरामद

हमारे संवाददाता

देहरादून। मोबाइल लूट की घटना का मात्र 24 घंटे में खुलासा करते हुए पुलिस ने दो बदमाशों को लूटे गये मोबाइल सहित गिरफ्तार कर लिया है। जिनके कब्जे से वारदात में प्रयुक्त चोरी की स्कूटी भी बरामद की गयी है।

जानकारी के अनुसार बीती 29 दिसम्बर को स्वाति कोठारी द्वारा थाना नेहरू कॉलोनी पर तहरीर देकर बताया गया था कि वह माता मंदिर रोड पर जा रही थी तभी पीछे से आये दो स्कूटी सवारों द्वारा मेरा मोबाइल छीना व घटना कर भाग गए। मामले को गम्भीरता से लेते हुए पुलिस ने तत्काल मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी गयी। आरोपियों की तलाश में जुटी पुलिस टीम द्वारा बीती शाम एक सूचना के आधार पर घटना में प्रयुक्त एक्टिवा के साथ दो बदमाशों रोशन थापा उर्फ रॉनी व विशाल चौधरी को दून यूनिवर्सिटी रोड नई बस्ती के पास से गिरफ्तार कर लिया गया। स्कूटी के बारे में पूछने पर उन्होने बताया कि यह स्कूटी हमने नेहरू कॉलोनी से चोरी की थी। बहरहाल पुलिस ने उन्हे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।